आँचल



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा

(वित्तीय सेवाएँ), मुंबई

आँचल

(25वाँ अंक, अप्रैल 2026 - सितंबर 2026)
(कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्तीय सेवाएँ), मुंबई की विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका)

कार्यालय का पता

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्तीय सेवाएँ), मुंबई
7वीं मंजिल, क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं. भवन, बाँद्रा-कुर्ला संकुल, मुंबई - 400051
दूरभाष - 022-26520873, ई-मेल - dgafsmum@cag.gov.in
वेबसाइट - https://cag.gov.in/mab/mumbai-i/hi

आँचल परिवार

संरक्षक
श्री विजय एन. कोठारी
महानिदेशक

मार्गदर्शन
श्री संदीप डी. पांडुले
निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय परामर्श
श्री सुशील तोपनो, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
सुश्री शिवानी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

संपादक
श्री जय राम सिंह, क. अनुवाद अधिकारी

अस्वीकरण (डिस्क्लेमर) - कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्तीय सेवाएँ), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार है । इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं और यह आवश्यक नहीं कि कार्यालय उन विचारों से सहमत हो।

संरक्षक की कलम से



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्तीय सेवाएँ), मुंबई अपनी विभागीय अर्द्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "**आँचल**" का नियमित प्रकाशन कर रहा है जो हर्ष की बात है । इससे भी अधिक खुशी की बात यह है कि यह अंक इस पत्रिका का रजत-जयंती (25वाँ) अंक है । एक छोटा-सा कार्यालय और पेशेगत व्यस्तताओं के बावजूद यह कार्यालय हिंदी पत्रिका आँचल का पिछले 25 अंकों से लगातार और निर्बाध प्रकाशन कर रहा है । कार्यालय के अधिकारी / कर्मचारी उत्साहपूर्वक हिंदी में अपनी रचनाएँ लिखकर पत्रिका की गुणवत्ता और पठनीयता, दोनों की अभिवृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं, यह अभिनन्दनीय है । कार्यालय का राजभाषा प्रकोष्ठ इस उपलब्धि के लिए बधाई का पात्र है ।

हिंदी विश्व-पटल पर भारत का प्रतिनिधित्व करती है । भारत के हर हिस्से में हिंदी को बोलने या समझनेवाले लोग मिल जाते हैं । इस तरह हिंदी भारत की राष्ट्रीय एकता एवं संवाद की सूत्रधार की भूमिका अदा करती है । संस्कृत को छोड़ दें तो हिंदी संभवतः विश्व की एकमात्र भाषा है जो जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी भी जाती है । पिछले 79 वर्षों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हमने काफी प्रगति की है, परंतु बहुत कुछ अभी करना है । मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से यह अपेक्षा करता हूँ कि वे अधिक से अधिक मौलिक काम हिंदी में करें और राजभाषा के सम्यक प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दें ।

मैं संपादक-मंडल सहित कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप देने में अपना अमूल्य योगदान दिया है । मेरी कामना है कि यह पत्रिका इसी सहजता एवं सरलता से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी भूमिका निभाती रहे एवं निरंतर प्रगति करती रहे ।

विजय एन. कोठारी
महानिदेशक

संदेश



हिंदी भारत की राजभाषा है । इस नाते हिंदी की अपनी प्रतिष्ठा है एवं दायित्व भी है । प्रतिष्ठा इस रूप में कि यह वैश्विक मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करती है । दायित्व इस अर्थ में कि हिंदी को भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में सूचीबद्ध समस्त 22 भाषाओं को प्रोत्साहन देते हुए भाषाई समरसता एवं समावेशिकता के माध्यम से स्वयं भारत की राजभाषा और कामकाज की भाषा बने । केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालय हिंदी में मौलिक कार्य का माहौल बनाने के उद्देश्य से हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन करते हैं ।

इसी कड़ी में कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्तीय सेवाएँ), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "आँचल" अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने में सफल सिद्ध हुई है । कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्तीय सेवाएँ), मुंबई की विभागीय हिंदी पत्रिका "**आँचल**" कार्मिकों को विभिन्न विषयों पर अपने मनोभावों को प्रकट करने के लिए एक सार्थक एवं सारस्वत मंच प्रदान करती है । प्रस्तुत अंक इस पत्रिका का 25वाँ अंक है । इस उपलब्धि पर हमें गर्व है । मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका निरंतर प्रगति-पथ पर अग्रसर रहते हुए राजभाषा हिंदी के प्रति अपने उत्तरदायित्व को कुशलतापूर्वक निभाने में समर्थ सिद्ध होगी ।

आशा करता हूँ कि कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी भविष्य में भी इस पत्रिका को उत्कृष्ट और ज्ञानवर्द्धक बनाने के प्रति अपना उत्साह और सहयोग इसी तरह बनाए रखेंगे । हिंदी भी भारत की किसी भी अन्य क्षेत्रीय भाषा की तरह ही यहाँ की मिट्टी की उपज है और इस नाते भारतीय संस्कारों से लबरेज है ।

संदीप डी. पांडुले
निदेशक (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

संरक्षक की कलम से			3	
संदेश			4	
संपादकीय			6	
क्रम संख्या	**रचना का शीर्षक**		**रचनाकार**	**पृष्ठ संख्या**
1	स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि			8
2	जो लौट के घर न आए			11
3	यादें	कविता	सुश्री चैताली बने	13
4	योद्धा	कविता	श्री जय राम सिंह	14
5	ख़त	कविता	सुश्री कीर्ति राज	15
6	अभिलाषा	कविता	श्रीमती वीणा शिरशाट	16
7	पहलगाम	कविता	श्री परितोष कुमार मल्ल	17
8	मैं और मेरी लिखाई	कविता	सुश्री कीर्ति राज	18
9	मानवता	कविता	श्रीमती सारिका ए. साळवे	19
10	जब मैं युगांडियन बनूँगी	ललित निबंध	सुश्री पूजा चौधरी	20
11	योग्यता का प्रतिफल	लघुकथा	श्री आकाश भिंगारदिवे	22
12	हनुमानजी और तुलसीदासजी का संबंध	निबंध	श्री प्रवीण नाफड़े	23
13	मैं वारी जावाँ	यात्रा-वृत्तांत	श्रीमती मनीषा शेंडगे	25
14	आती क्या खंडाला ?	यात्रा-वृत्तांत	सुश्री कीर्ति राज	27
15	ये जीवन है	कहानी	श्री नवनाथ बनसोडे	29
16	जब घड़ी रुक गई	कहानी	सुश्री प्रिया सिंह	31
17	जब हर काम हिंदी में करना अनिवार्य हो जाए	हास्य	श्री सचिन पन्नू	33
18	रथयात्रा : इतिहास एवं महत्व	निबंध	श्री सौरभ नायक	35
19	मोबाइल की दुनिया में खोते रिश्ते	निबंध	सुश्री शिवानी वर्मा	37
20	हम खुश नहीं हैं, क्यों ?	निबंध	सुश्री रितू मोटवानी	39
22	क्रिकेट : मेरा साथी, मेरा शिक्षक	संस्मरण	श्री परितोष कुमार मल्ल	41
23	एक कप चाय की कीमत	कहानी	श्री सुधांशु रावत	43
24	सेहत की हाज़िरी	निबंध	श्री अनिल पूनिया	45
25	नाम में सब कुछ रखा है	हास्य-कथा	सुश्री शिवानी	49
26	कॉकरोच आया	हास्य-कथा	श्री अजीत कुमार	50
27	बेचारा संपादक	हास्य-कथा	श्री जय राम सिंह	52
28	राजभाषा प्रश्नोत्तरी			55
29	राजभाषा नियम 1976			56
30	आपके पत्रः आपकी प्रतिक्रियाएँ			60
31	नियुक्तियाँ/पदोन्नतियाँ/स्थानांतरण/सेवानिवृत्ति			61
32	चित्रों के झरोखों से			62

राजभाषा हिंदी के प्रयोग से संबंधित टूलों के उपयोग में हिचकिचाहट



श्री जय राम सिंह
कनि. अनु. अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (वित्तीय सेवाएँ), मुंबई की अर्द्ध-वार्षिक हिंदी पत्रिका "आँचल" का 25वाँ अर्थात् रजत-जयंती अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अपार खुशी एवं गर्व का अनुभव हो रहा है । इस उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए पत्रिका से संबंधित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को हार्दिक बधाई जो किसी न किसी रूप से पत्रिका के प्रथम अंक से लेकर आज तक जुड़े रहे हैं । यह पत्रिका इस कार्यालय के कर्मियों की हिंदी में सृजनशीलता को एक सार्थक मंच प्रदान करती है । पिछले अंकों की तरह ही इस अंक के रचनाकारों ने भी अपनी एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट रचनाओं से हिंदी के इस गुलदस्ते को सजाया है । आशा है कि पाठकों को पढ़कर आनंद आएगा ।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के संवैधानिक नेतृत्व में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग देश की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था के रूप में काम करता है । संवैधानिक प्रावधानों एवं केन्द्र सरकार के प्रयासों से कदम से कदम मिलाते हुए भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में हर संभव उपाय कर रहा है । इसी कड़ी में विभाग ने एक दूरगामी निर्णय लेते हुए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) पर आधारित मशीन-अनुवाद टूल भाषिणी की शुरुआत की है । भारत सरकार का राजभाषा विभाग इससे पहले से इसी तरह के टूल (भारती अथवा कंठस्थ) का संचालन कर रहा है ।

ये दोनों टूल ई-ऑफिस में भी उपलब्ध कराए गए हैं ताकि प्रयोक्ता अपनी सुविधानुसार अनुवाद की सुविधा का प्रयोग करें और अधिकाधिक काम हिंदी में करने का प्रयास करें । लेकिन देखा जा रहा है कि इतनी सुविधाओं के बावजूद सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की दिशा में एक दृश्य/अदृश्य हिचक है ।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग में तकनीकी मदद लेने से हिचक (हिचकिचाहट) के पीछे कई मनोवैज्ञानिक, व्यावहारिक और तकनीकी कारण हैं। विभिन्न तकनीकी संस्थान लगातार टूल्स विकसित कर रहे हैं, फिर भी कार्यालयों में इसे पूरी तरह अपनाने में निम्नलिखित मुख्य बाधाएँ आती हैं:-

1. **मनोवैज्ञानिक और आदत की बाधाएँ/बदलाव का विरोध**: कर्मचारी सालों से पारंपरिक टाइपिंग या अँग्रेजी के ढर्रे पर काम कर रहे हैं । नई तकनीक सीखने में उन्हें अतिरिक्त प्रयास करना पड़ता है ।

समाधान - हिंदी में काम करने में हिचकिचाहट रखनेवाले अधिकारियों/कर्मचारियों को लगातार उत्साहित करते रहने से इस समस्या से उबरा जा सकता है ।

2. **त्रुटियों (गलतियों) का डर**: कर्मचारियों को लगता है कि एआई या वॉयस टाइपिंग टूल्स, अनुवाद में बड़ी गलतियाँ कर सकते हैं, जिससे सरकारी दस्तावेज में अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

समाधान - जहाँ भी त्रुटियाँ दिखें, वहाँ अँग्रेजी के शब्दों का प्रयोग अथवा द्विभाषी टेक्स्ट का प्रयोग कर इस समस्या का समाधान किया जा सकता है ।

3. **आत्मविश्वास की कमी**: कम्प्यूटर पर हिंदी सॉफ्टवेयर्स को कॉन्फ़िगर करने या उनके शॉर्टकट सीखने में हिचक होती है ।

समाधान - लगातार उत्साहवर्द्धन और प्रशिक्षण ही इसका समाधान है ।

4. **भाषाई और तकनीकी चुनौतियाँ/जटिल प्रशासनिक शब्दावली**: राजभाषा हिंदी में इस्तेमाल होने वाले तकनीकी और प्रशासनिक शब्द काफी कठिन होते हैं। वर्तमान टूल्स कभी-कभी इनका सटीक संदर्भ (Context) नहीं समझ पाते ।

समाधान - किसी भी भाषा को कोई भी नया शब्द कठिन ही होता है । लगातार प्रयोग से ही उस शब्द का संचलन और लोकप्रियता, दोनों बढ़ेंगे ।

5. **कीबोर्ड लेआउट की विविधता**: इनस्क्रिप्ट (InScript), रेमिंग्टन (कृतिदेव) और फोनेटिक (Phonetic/Hinglish) जैसे कई कीबोर्ड ले-आउट होने के कारण कर्मचारी किसी एक पर टिक नहीं पाते और भ्रमित रहते हैं।

समाधान - अधिकतर कम्प्यूटरों में अब इनस्क्रिप्ट ले-आउट इंस्टॉल हो रहा है जो प्रमाणीकृत है ।

6. **खराब फॉन्ट फॉर्मेटिंग**: पुराने फॉन्ट (जैसे कृतिदेव, चाणक्य) से यूनिकोड (Unicode) में बदलने पर टेक्स्ट बिखर जाता है, जिससे काम दोबारा करना पड़ता है।

समाधान - यूनिकोड समर्थित मंगल फॉन्ट आधिकारिक फॉन्ट है । यदि सभी इस फॉन्ट का ही प्रयोग करें तो कोई समस्या नहीं होगी ।

7. **संसाधनों और प्रशिक्षण का अभाव/जागरूकता की कमी**: कई विभागों में कर्मचारियों को पता ही नहीं होता कि 'लीला' (LILA), 'कंठस्थ' (Kanthasth), या 'महाशब्दकोश' जैसे सरकारी और मुफ्त टूल्स उपलब्ध हैं ।

समाधान - इसके लिए लगातार सूचनाओं का प्रवाह, बातचीत, संगोष्ठियाँ, प्रशिक्षण आदि आयोजित करने चाहिए ।

8. **प्रशिक्षण (Training) की कमी**: अधिकतर कार्यालय हिंदी प्रशिक्षण के कार्यक्रमों को गंभीरता से नहीं लेते ।

समाधान - सरकारी कार्यालयों को यह समझना होगा कि हिंदी में काम करना व्यक्तिगत आवश्यकता तो है ही, संवैधानिक ज़रूरत भी है । अतः हिंदी प्रशिक्षण के कार्यक्रमों को भी कार्यालयों के अन्य कार्यक्रमों की तरह ही महत्व देना चाहिए ।



तुम वहन कर सको जन मन में मेरे विचार
तुम रूप कर्म से मुक्त, शब्द के पंख मार,
कर सको सुदूर मनोनभ में जन के विहार,
वाणी मेरी, चाहिए तुम्हें क्या अलंकार !

- सुमित्रानंदन पंत

स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि

(हमारी गृह पत्रिका "आँचल" का यह नियमित स्तम्भ है । इस अंक में हम देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं । आज हम सभी आजाद देश के नागरिक हैं क्योंकि बीते हुए कल में इन असंख्य वीर सेनानियों ने हमारे 'आज' को सुखमय बनाने के लिए अपने 'आज' की आहुति दे दी थी । आज की युवा-पीढ़ी जिसे ज़ेन-ज़ी कहा जा रहा है, शायद इस बात की अनुभूति भी न कर सके कि हमारे पूर्वजों कितने संघर्ष, त्याग और बलिदानों से देश की स्वतंत्रता अर्जित की थी । इस अंक में हम स्वतंत्रता के वैसे नायकों की गाथाएँ सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं जिनकी अधिक चर्चा नहीं होती । इन्हें इतिहास में वह स्थान नहीं मिला जिसके वे अधिकारी हैं - संपादक)

बटुकेश्वर दत्त



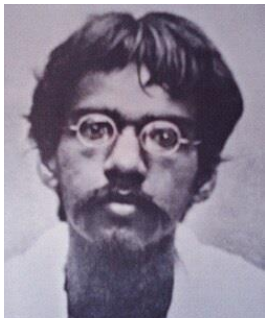
बटुकेश्वर दत्त भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रान्तिकारी थे । बटुकेश्वर दत्त को देश ने सबसे पहले 8 अप्रैल 1929 को जाना, जब वे भगत सिंह के साथ केन्द्रीय विधान सभा में बम विस्फोट के बाद गिरफ्तार किए गए। बटुकेश्वर दत्त का जन्म 18 नवम्बर 1910 को ग्राम-ओंयाड़ि, जिला - नानी बेदवान (बंगाल) में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनका बचपन अपने जन्म स्थान के अतिरिक्त बंगाल प्रान्त के वर्धमान जिला अंतर्गत खण्डा और मौसु में बीता । इनकी स्नातक स्तरीय शिक्षा पी॰पी॰एन॰ कॉलेज कानपुर में सम्पन्न हुई। 1924 में कानपुर में इनकी भगत सिंह से भेंट हुई। इसके बाद इन्होंने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के लिए कानपुर में कार्य करना प्रारंभ किया। इसी क्रम में बम बनाना भी सीखा।

बटुकेश्वर दत्त ने 8 अप्रैल 1929 को दिल्ली स्थित केंद्रीय विधानसभा (वर्तमान में संसद भवन) में भगत सिंह के साथ बम विस्फोट कर ब्रिटिश राज्य की तानाशाही का विरोध किया। इस घटना के बाद बटुकेश्वर दत्त और भगत सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। 12 जून 1929 को इन दोनों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। सजा सुनाने के बाद इन लोगों को लाहौर फोर्ट जेल में डाल दिया गया। यहाँ पर इनलोगों पर लाहौर षडयंत्र केस चलाया गया। उल्लेखनीय है कि साइमन कमीशन का विरोध-प्रदर्शन करते हुए लाहौर में लाला लाजपत राय को अँग्रेजों के इशारे पर अँग्रेजी राज के सिपाहियों द्वारा इतना पीटा गया कि उनकी मृत्यु हो गई। इस मृत्यु का बदला अँग्रेजी राज के जिम्मेदार पुलिस अधिकारी को मारकर चुकाने का निर्णय क्रांतिकारियों द्वारा लिया गया था। इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप लाहौर षड़यंत्र केस चला, जिसमें भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी की सजा दी गई थी। बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास काटने के लिए काला पानी जेल भेज दिया गया। जेल में ही उन्होंने 1933 और 1937 में ऐतिहासिक भूख हड़ताल की। सेल्यूलर जेल से 1937 में बाँकीपुर केन्द्रीय कारागार, पटना में लाए गए और 1938 में रिहा कर दिए गए। काला पानी से गंभीर बीमारी लेकर लौटे दत्त फिर गिरफ्तार कर लिए गए और चार वर्षों के बाद 1945 में रिहा किए गए।

भारत की स्वतंत्रता के बाद नवम्बर, 1947 में अंजलि दत्त से विवाह करने के बाद वे पटना में रहने लगे। बिहार विधान परिषद ने बटुकेश्वर दत्त को अपना सदस्य बनाने का गौरव 1963 में प्राप्त किया। दत्त की मृत्यु 20 जुलाई 1965 को नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में हुई। मृत्यु के बाद इनका दाह संस्कार इनके अन्य क्रांतिकारी साथियों- भगत सिंह, राजगुरु एवं सुखदेव की समाधि स्थल पंजाब के हुसैनीवाला में किया गया। इनकी एक पुत्री भारती बागची पटना में रहती हैं। बटुकेश्वर दत्त के विधान परिषद में सहयोगी रहे इन्द्र कुमार कहते हैं कि 'स्व॰ दत्त राजनैतिक महत्वाकांक्षा से दूर शांतचित्त एवं देश की खुशहाली के लिए हमेशा चिन्तित रहने वाले क्रांतिकारी थे।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी अमर शहीद श्री बटुकेश्वर दत्त जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

बारीन्द्रकुमार घोष



बारीन्द्रनाथ घोष भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकार तथा "युगान्तर" के संस्थापकों में से एक थे। वह 'बारिन घोष' नाम से भी प्रसिद्ध हैं। बंगाल में क्रांतिकारी विचारधारा को फैलाने का श्रेय बारीन्द्रनाथ घोष और भूपेन्द्रनाथ दत्त (विवेकानंद जी के छोटे भाई) को ही जाता है। महान अध्यात्मवादी श्री अरविन्द घोष उनके बड़े भाई थे। श्री बारींद्र सन् 1909 से लेकर 1920 तक सेल्युलर जेल में बन्दी थे।

श्री बारीन्द्रनाथ घोष का जन्म 5 जनवरी 1880 को लन्दन के पास क्रोयदन (croydon) नामक कस्बे में हुआ था। उनका पैतृक निवास कोन्नगर था जो आजकल पश्चिम बंगाल में है। उनके पिता श्री कृष्नाधन घोष एक नामी चिकित्सक व प्रतिष्ठित जिला सर्जन थे जबकि उनकी माता देवी स्वर्णलता प्रसिद्ध समाज सुधारक व विद्वान राजनारायण बसु की पुत्री थीं। श्री अरविन्द, जो कि पहले क्रन्तिकारी और फिर अध्यात्मवादी हो गए थे, उनके तीसरे बड़े भाई थे जबकि उनके दूसरे बड़े भाई श्री मनमोहन घोष अंग्रेजी साहित्य के विद्वान, कवि और कलकत्ता के प्रेसिडेंसी कॉलेज व ढाका यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के प्रोफ़ेसर थे। बारिन घोष की स्कूली शिक्षा बिहार के देवघर (अब झारखंड में) में हुई व 1901 में प्रवेश परीक्षा पास करके उन्होंने पटना कॉलेज में दाखिला लिया। बरोड़ा में उन्होंने मिलिट्री ट्रेनिंग ली। इसी समय श्री अरविन्द से प्रभावित होकर उनका झुकाव क्रांतिकारी आन्दोलन की तरफ हुआ।

1902 में बारींद्र कलकत्ता वापस आये और यतीन्द्रनाथ मुखर्जी (बाघ जतिन) के साथ मिलकर बंगाल में अनेक क्रांतिकारी समूहों को संगठित करना शुरू कर दिया। बारींद्र घोष और भूपेन्द्रनाथ दत्त के सहयोग से 1907 में कलकत्ता में अनुशीलन समिति का गठन किया गया जिसका प्रमुख उद्देश्य था - "खून के बदले खून"। 1905 के बंगाल विभाजन ने युवाओं को आन्दोलित कर दिया था, जो कि अनुशीलन समिति की स्थापना के पीछे एक प्रमुख कारण था। अनुशीलन समिति का दूसरा कार्यालय 1904 में ढाका में खोला गया। जिसका नेतृत्व पुलिनबिहारी दास और पी. मित्रा ने किया। ढाका में इसकी लगभग 500

शाखाएँ थीं। इसके अधिकांश सदस्य स्कूल और कॉलेज के छात्र थे। सदस्यों को लाठी, तलवार और बन्दूक चलने ली ट्रेनिंग दी जाती थी, हालाँकि बंदूकें आसानी से उपलब्ध नहीं होती थीं।

बारींद्र घोष ने 1905 में क्रांति से सम्बंधित "भवानी मंदिर " नामक पहली किताब लिखी। इसमें "आनन्द मठ" का भाव था और क्रांतिकारियों को सन्देश दिया गया था की वह स्वाधीनता पाने तक संन्यासी का जीवन बिताएँ। बारींद्र घोष के नेतृत्व में युगांतर समूह ने सर्वत्र क्रांति का बिगुल बजाया। इसने बम बनाये और दुष्ट अंग्रेज अधिकारीयों की हत्या का प्रयास किया। बारींद्र ने दूसरी पुस्तक "वर्तमान रणनीति" लिखा, जिसे अक्टूबर-1907 में अविनाशचन्द्र भट्टाचार्य ने प्रकाशित किया। यह किताब बंगाल के क्रांतिकारियों की पाठ्यपुस्तक बन गयी। इसमें कहा गया था कि भारत की आजादी के लिए सैन्य शिक्षा और युद्ध जरूरी है।

बारींद्र और बाघ जतिन ने पूरे बंगाल से अनेक युवा क्रांतिकारियों को खड़ा करने में निर्णायक भूमिका अदा की। क्रांतिकारियों ने कलकत्ता के मनिक्तुल्ला में "मनिक्तुल्ला समूह" बनाया। यह उनका एक गुप्त स्थान था जहाँ वे बम बनाते और हथियार इकठ्ठा करते थे। 30 अप्रैल 1908 को खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने किंग्स्फोर्ड की हत्या का प्रयास किया जिसके फलस्वरूप पुलिस ने बहुत तेजी से क्रांतिकारियों की धर-पकड़ शुरू कर दी और दुर्भाग्य से 2 मई 1908 को श्री बारींद्र घोष को भी उनके कई साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर "अलीपुर बम केस" चलाया गया और प्रारम्भ में ही उन्हें मृत्युदण्ड की सजा दे दी गयी, परन्तु बाद में उसे आजीवन कारावास कर दिया गया। उन्हें अंडमान की भयावह सेल्युलर जेल में भेज दिया गया जहाँ वह 1920 तक बन्दी रहे।

बारींद्र घोष को 1920 में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद दी गयी आम क्षमा (general amnesty) में रिहा कर दिया गया जिसके बाद वह कलकत्ता आ गए और पत्रकारिता प्रारम्भ कर दी। किन्तु जल्द ही उन्होंने पत्रकारिता भी छोड़ दी और कलकत्ता में आश्रम बना लिया। 1923 में वह पांडिचेरी चले गए जहाँ उनके बड़े भाई श्री अरविन्द ने प्रसिद्ध "श्री ऑरोविंदो आश्रम" बनाया था। श्री अरविन्द ने उन्हें आध्यात्म और साधना के प्रति प्रेरित किया जबकि श्री ठाकुर अनुकुलचंद उनके गुरु थे। इन्होंने ही अपने अनुयायियों द्वारा बारींद्र की सकुशल रिहाई में मदद की थी। 1929 में बारींद्र दोबारा कलकत्ता आये और पत्रकारिता शुरू कर दी। 1933 में उन्होंने "द डॉन ऑफ इण्डिया (The Dawn of India) नामक अँग्रेजी साप्ताहिक पत्र शुरू किया। वह "द स्टेट्समैन" से जुड़े रहे और 1950 में वह बांग्ला दैनिक "दैनिक बसुमती" के संपादक हो गए। 18 अप्रैल 1959 को इस महान स्वतंत्रता सेनानी का देहान्त हो गया।

(आँचल परिवार देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति अमर स्वतंत्रता-सेनानी श्री बारींद्रनाथ घोष को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

जब अंत समय आया तो कह गए कि अब चलते हैं
खुश रहना देश के यारों अब हम तो सफ़र करते हैं ।
जो ख़ून गिरा पर्वत पर वह ख़ून था हिन्दुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो क़ुर्बानी । **- कवि प्रदीप**

जो लौट के घर न आए

(हमारी विभागीय गृह-पत्रिका आँचल के इस नियमित स्तम्भ में हम देश और देशवासियों की रक्षा में पिछले एक वर्ष में सर्वोच्च बलिदान देनेवाले वीर सपूतों के बलिदानों का स्मरण कर उन्हें कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। पिछले अंक में हम अपने पाठकों के लिए ऑपरेशन सिन्दूर का आधिकारिक विवरण प्रस्तुत किया था । इस अंक में भारतीय सेना के उन दो महान जाँबाज सपूतों की बहादुरी और दिलेरी की कहानी प्रस्तुत है जिन्होंने अपने सर्वोच्च बलिदान से भारतीय सैन्य परंपरा में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखाया है - संपादक)

लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी (IC-91128W) कीर्ति चक्र, 1 सिक्किम स्काउट्स

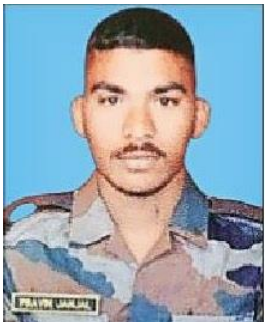


मई 2025 में, लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी की यूनिट को भारत-चीन सीमा के पास, उत्तरी सिक्किम के रणनीतिक रूप से संवेदनशील और ऊँचे पहाड़ी इलाके में तैनात किया गया था। यूनिट के ज़िम्मेदारीवाले इलाके (AOR) में ऊबड़-खाबड़ पहाड़ और खतरनाक घाटियाँ शामिल थीं, जिनमें से ज़्यादातर इलाके साल के ज़्यादातर समय बर्फ से ढँके रहते थे। 22 मई 2025 को, लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी को बाइछू से चू जंक्शन पर मौजूद टैक्टिकल ऑपरेटिंग बेस (TOB) तक 'रूट ओपनिंग पेट्रोल' (ROP) और बर्फ हटाने के ऑपरेशन का नेतृत्व करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। सिक्किम स्काउट्स की पहली बटालियन के सैनिकोंवाली इस निगरानी टीम की अहम ज़िम्मेदारी यह पक्का करना था कि सैनिकों और ज़रूरी सामान की आवाजाही के लिए रास्ता खुला और सुरक्षित रहे – जो ऐसे इलाकों में सीमा पर होने वाले ऑपरेशन का एक आम लेकिन बहुत ज़रूरी हिस्सा है।

हालाँकि, जो काम एक सामान्य ऑपरेशन के तौर पर शुरू हुआ था, वह जल्द ही बहादुरी और निःस्वार्थ नेतृत्व की परीक्षा बन गया। पहाड़ी इलाके में तेज़ी से बहती नदी पर बने लकड़ी के एक अस्थाई पुल को पार करते समय, अग्निवीर स्टीफन सुब्बा का पैर फिसल गया और वे बर्फीले, उफनते पानी में बह गए। बिना एक पल की भी देरी किए, लेफ्टिनेंट तिवारी ने अपने साथी को बचाने के लिए तुरंत उस बर्फीले पानी में छलाँग लगा दी; ऐसा उन्होंने पूरी तरह से अपने सैनिक स्वभाव और कर्तव्य-बोध से प्रेरित होकर किया। उस मुश्किल घड़ी में, उन्होंने अपनी सुरक्षा की नहीं, बल्कि अपनी कमान में मौजूद उस व्यक्ति की जान बचाने के बारे में सोचा। खतरनाक हालात को देखते हुए, नायक पुकार कटेल तुरंत बचाव कार्य में शामिल हो गए। तेज़ बहाव और बर्फीले पानी का सामना करते हुए, दोनों ने लगातार संघर्ष किया और अग्निवीर सुब्बा को सुरक्षित बाहर निकालने में कामयाब रहे। लेकिन, अफरा-तफरी और पहाड़ी नदी के तेज़ बहाव के बीच, लेफ्टिनेंट तिवारी पानी के साथ बह गए। टीम की उन्हें बचाने की तमाम कोशिशों के बावजूद, पानी का तेज़ बहाव उन्हें दूर ले गया। तुरंत एक बड़ा सर्च ऑपरेशन शुरू किया गया और काफी कोशिशों के बाद, उनका शव लगभग 800 मीटर दूर बहाव की दिशा में मिला। लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी सिर्फ़ 23 साल के थे और उन्हें सेना में शामिल हुए मुश्किल से छह महीने ही हुए थे। इतने कम समय में ही, उन्होंने अपने काम के प्रति ईमानदारी, विनम्रता और अटूट समर्पण के कारण अपने साथियों का सम्मान और प्यार हासिल कर लिया था। उनकी बहादुरी और बलिदान की मिसाल भारतीय सेना की सबसे अच्छी परंपरा – **"स्वयं से पहले सेवा"** – को दर्शाती है। अपनी जान की परवाह किए बिना अपने साथी की सुरक्षा को प्राथमिकता देकर, लेफ्टिनेंट तिवारी ने बेहतरीन नेतृत्व, बहादुरी और साथी के प्रति अटूट साथ की मिसाल पेश की।

असाधारण बहादुरी, काम के प्रति समर्पण और कर्तव्य निभाते हुए दिए गए सर्वोच्च बलिदान के लिए, लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी को मरणोपरांत देश के दूसरे सबसे बड़े शांति-कालीन वीरता पुरस्कार **'कीर्ति चक्र'** से सम्मानित किया गया है ।

सिपाही प्रवीण प्रभाकर जंजाल (IC- 4594379M), कीर्ति चक्र, 2 महार रेजिमेंट



महाराष्ट्र के अकोला जिले के मोरगांव भाकरे के रहने वाले सिपाही प्रवीण प्रभाकर जंजाल का जन्म एक अत्यंत ग़रीब परिवार में हुआ था । उसके पिता श्री प्रभाकर जंजाल के पास मात्र डेढ़ एकड़ ज़मीन है । प्रवीण अपने भाई सचिन के साथ सेना की नौकरी के लिए तैयारी कर रहे थे । प्रवीण का चयन पहले प्रयास में ही हो गया था और उन्हें महार रेजिमेंट की पोस्टिंग मिली थी । वे 2020 में इंडियन आर्मी की 2 महार रेजिमेंट में शामिल हुए। शुरुआत में उनकी पोस्टिंग मणिपुर में हुई थी। चार महीने बाद उन्हें कुलगाम भेजा गया, जहाँ उन्हें HQ-1 सेक्टर RR (राष्ट्रीय राइफल्स) में तैनात किया गया।

खुफिया सूत्रों से सूचना मिली थी कि जम्मू-कश्मीर के कुलगाम ज़िले के मोदरगाम में लगभग आधा दर्जन आतंकवादी छिपे हुए हैं । सेना की टीम उन आतंकवादियों की धरपकड़ के लिए सघन तलाशी अभियान चलाने लगी। पूरे इलाके की घेराबंदी कर दी गई । तभी अँधेरे में अचानक छिपे आतंकवादियों की तरफ से भीषण गोलीबारी शुरु हो गई । आतंकवादी वहाँ से किसी तरह बचकर भाग निकलने की फिराक में थे । सिपाही प्रवीण प्रभाकर जंजाल अपनी टीम के साथ आतंकवादियों से लोहा लेने लगे । सिपाही प्रवीण जंजाल ने अनंतनाग जिले में घेराबंदी और तलाशी अभियान के दौरान असाधारण बहादुरी दिखाई। उन्होंने अपनी सूझ-बूझ और निडर संकल्प का परिचय देते हुए आतंकवादियों को भागने से रोका । सिपाही प्रवीण ने हमले में चार आतंकवादियों को मार गिराया । मुठभेड़ बहुत ही भीषण था । दोनों तरफ से भीषण गोलीबारी हुई जिसमे लांस नायक प्रदीप कुमार और सिपाही प्रवीण, दोनों को गोली लगी और वे शहीद हो गए।

देश के बहादुर बेटे, महार रेजिमेंट/राष्ट्रीय राइफल्स की पहली बटालियन के सिपाही प्रवीण जंजाल के असाधारण साहस, वीरता और सर्वोच्च बलिदान को सलाम। उन्हें नई दिल्ली में माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा मरणोपरांत 'कीर्ति चक्र' से सम्मानित किया गया।

(आँचल परिवार शौर्य, पराक्रम, देशप्रेम, नेतृत्व, साहस और बलिदान की अदम्य मूर्ति भारतीय सशस्त्र सेनाओं के जाँबाज सैनिकों एवं इस ऑपरेशन से जुड़े सभी वैज्ञानिकों, अभियंताओं एवं कारीगरों को कृतज्ञ राष्ट्र की तरफ से सैल्यूट एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।)

स्रोत - https://honourpoint.in/

यादें



सुश्री चैताली तुषार बने
सुपुत्री - श्री तुषार बने,
व.ले.प.

आँखें हैं नम, दिल है उदास
याद आ रहा है मुझे मेरा वह पहला क्लास
चलो मिलकर याद करते हैं उस दिन को
जब हम सब पहली बार यहाँ मिले थे

क्या वह दिन था क्या वह सुबह थी
आँखों से पानी बह रहा था और हाथ में थी पानी की बोतल
नया स्कूल, नया यूनिफॉर्म, नया बैग
सब कुछ नया था
टीचर को देखकर हमारे दिल में एक खौफ-सा जग गया था
मम्मी-पापा को बाय करने को दिल नहीं चाहता था
क्लास में जाकर रोने का प्रोग्राम फिर से शुरु हो जाता था
टीचर हमको प्यार से शांत कर देती थी
क्या वे दिन थे क्या वो सुबह थी

कुछ दिन बाद यार भी बहुत बन चुके थे
अब मम्मी-पापा से बिछुड़ने के ग़म को
यारों के साथ आनेवाले फन ने रिप्लेस कर दिया था
धीरे-धीरे हमारे दोस्त बढ़ते गए, नयी-नयी शरारतें करते गए
टीचर सिखाती थी, हम दोस्तों से गप्पें लड़ाते थे
सेटिंग लगाकर एक्जाम में पास हो जाते थे

फिर हुई एंट्री हमारी कॉलेज में
ना जाने जिन टीचर्स ने जूनियर टू टेंथ प्यार और सपोर्ट किया
उनसे ही आज नज़रें मिलाने से झिझकते हैं
नहीं समझ पाए उनके प्यार को,
नहीं जान पाए कि उनके सिवा हम अधूरे हैं
याद आई तो आज जान लिया हमने ये सब
और आज हम पूरे हैं ... और आज हम पूरे हैं ।

भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी । अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

- अनुच्छेद 343 (भारतीय संविधान)

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है - श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन

योद्धा



जय राम सिंह
कनि. अनु. अधिकारी

योद्धा है वह, नहीं रुकेगा, नहीं रुकेगा
अरि के आगे, नहीं झुकेगा, नहीं झुकेगा

जिसने स्वेदकणों को अमृत जान लिया है
तपन, जलन, धूपों को विस्मृत मान लिया है
जो कर्मों के वर्षाजल से ही रीता है
धरती पर ही पाँव जमाए जो जीता है

धक्का दोगे ! नहीं गिरेगा, नहीं गिरेगा
योद्धा है वह, नहीं रुकेगा, नहीं रुकेगा

जो खेतों की धूल चाट कर बड़ा हुआ है
तूफ़ानों से लड़ा, गिरा फिर खड़ा हुआ है
जिसने धरती को खोदा, रस्ता मोड़ा है
जो रवि के रथ का बहुसंवेगित घोड़ा है

रण के मारे नहीं मरेगा, नहीं मरेगा
योद्धा है वह, नहीं रुकेगा, नहीं रुकेगा

जो हड्डी को फूँक-फूँक कर आग बना है
बन अनाज पेटों को भरता, साग बना है
जिसने जालों को तोड़ा शासन मोड़ा है
जो युग का घोड़ा है बूँदों को जोड़ा है

वह जन जारे, नहीं जरेगा, नहीं जरेगा
योद्धा है वह, नहीं रुकेगा, नहीं रुकेगा

जिसने जान लिया लघुता में ही प्रभुता है
जीवट जिसमें हो उसमें ही तो विभुता है
पाते हैं लघु लोग महाउपाधि जीवन की
दुःसंपत्ति होती है महाव्याधि जीवन की

युग-कोषों को वही भरेगा, वही भरेगा
योद्धा है वह नहीं रुकेगा, नहीं रुकेगा

जब एक बार यह निश्चय कर लिया गया कि सन् 1965 से सारे काम हिंदी में ही होंगे, तब उसे अवश्य कार्यान्वित करना चाहिए ।

- सेठ गोविन्द दास

ख़त



सुश्री कीर्ति राज
आशुलिपिक ग्रेड-II

भेज रही हूँ ख़त, उसे पढ़ पाओगे क्या ?

जो मैं देखना चाहूँ आपको, तो नज़र आओगे क्या ?
सुना है रहते हो कहीं दूर आसमान में
मैं तारों की तरफ देखूँ, आप टिमटिमाओगे क्या ?
जो मैं देखना चाहूँ आपको, तो आप नजर आओगे क्या ?

मेरी ख्वाहिश ज्यादा नहीं, माँ की खुशियों की तलाश है
आप तो छोड़ गए दादू, सिखाई बातें सब याद हैं
जो लगूँ टूटने मैं दादू, आप हौसला बढ़ाओगे क्या ?
जो मैं देखना चाहूँ आपको, तो आप नजर आओगे क्या ?

दादी कहती है साथ हो, हमारे आस पास ही
ना जाने क्यों पचती नहीं, मुझे दादी की ये बात ही
दूर करने को मेरा भ्रम दादू, मुझे गले लगाओगे क्या ?
जो मैं देखना चाहूं आपको, तो आप नजर आओगे क्या ?

सुना है रहते हो कहीं दूर आसमान में
मैं तारों की तरफ देखूँ, आप टिमटिमाओगे क्या ?
जो मैं देखना चाहूँ आपको, तो आप नजर आओगे क्या ?



हिंदी का पौधा दक्षिणवालों ने त्याग से सींचा है - शंकरराव कप्पीकेरी

अभिलाषा



श्रीमती वीणा जी शिरशाट
पर्यवेक्षक

खुशी-खुशी में बीत गए हैं, बीत रहे हैं साल-दर-साल
काम के प्रति ईमानदारी हो, तो रहता नहीं मलाल

जीवन के पथ पर आर्थिक स्थैर्य की ज़रूरत होती
किराया ठीक-ठाक हो तभी गाड़ियाँ सवारी ढ़ोती
मन-मरुभूमि में इस नौकरी ने भर दिया था ताल
काम के प्रति ईमानदारी हो, तो रहता नहीं मलाल

आर्थिक समृद्धि, परिवार, मान-सम्मान सब कुछ मिला
पाकर मेरा रोम-रोम उपवन के फूल की तरह खिला
मैने जीवन सरल रखा, पाला नहीं कोई भ्रमजाल
काम के प्रति ईमानदारी हो, तो रहता नहीं मलाल

हम जो बोते हैं वही काटते हैं, पढ़ा था कभी मैंने
व्यवहार के धरातल पर सौ फीसदी सही पाया मैंने
सम्मान दिया, सम्मान पाया कुल इतना ही है हाल
काम के प्रति ईमानदारी हो, तो रहता नहीं मलाल

बीत गए 39 वर्ष एक वर्ष और है बाकी
मेरी सबने सुनी प्रेम से और सुनी मैं सबकी
कुछ नए मिले कुछ बिछड़ गए वक्त की है चाल
काम के प्रति ईमानदारी हो, तो रहता नहीं मलाल

हर दिन कुछ नया सीखा हर दिन कुछ नया दीखा
कार्यालय भी तो सृष्टि है अतरंगी-सतरंगी सरीखा
विदा कैसे होउँगी मैं यह सोच कर रही है बेहाल
काम के प्रति ईमानदारी हो, तो रहता नहीं मलाल

खुशी-खुशी में बीत गए, बीत रहे हैं साल-दर-साल
काम के प्रति ईमानदारी हो, तो रहता नहीं मलाल

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ । पर मेरे ही देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सहन नहीं कर सकता ।

- आचार्य विनोबा भावे

पहलगाम



श्री परितोष कुमार मल्ल
लेखापरीक्षक

नयन* सामने मार दिया, अपनों की वेदना क्या होगी?
किस हद तक टूटे होंगे वे, अंतस की चेतना क्या होगी।
हर ओर चीख, चिल्लाहट और घबराहट का मंजर होगा।
जिसे विधवा करके छोड़ दिया, दुःख की उत्तेजना क्या होगी?

थे आए शान्ति पाने को, संग कुछ पल साथ बिताने को
था मगर पता क्या आए थे वो जीवन दाँव लगाने को
अपनों की आँखों के समक्ष थी खुशियाँ जो कुछ लम्हों की,
थी ढूँढ रही चादर अगले पल, लाशों के ढेर छिपाने को।

ना कहो कि ये कश्मीर है बस
ना कहो कि ये तस्वीर है बस
या कहो कि धर्म के थे हिंदू
तभी ये उनकी तकदीर है बस

मजहब आतंक का होता ना है सुना लोग ये कहते हैं
फिर क्यों आतंकी बार बार, बस धर्म पूछते रहते हैं?
ये पहलगाम ना पहली बार, ये हम सालों से सहते हैं
हम सनातनी हैं सब किंचित जाति में बँटकर रहते हैं।

किंतु जिस दिन होगे शिकार तुम, तो प्रतिवेदना क्या होगी?
क्या कष्ट,पीड़ा और होगा दर्द, जीवन की चेतना क्या होगी?
क्या हाथ नहीं जोड़ा उसने, आँखों के सामने मरा पति?
कैसे कोई अब भूलेगा, धरती के स्वर्ग की यही गति ?
जिसे विधवा करके छोड़ दिया, दुःख की उत्तेजना क्या होगी?
और नयन सामने मार दिया, अपनों की वेदना क्या होगी?

* पहलगाम में अपनी पत्नी के सामने धर्म पूछकर शहीद किए गए एक पति का नाम

बढ़ने दो इसे सदा आगे, हिंदी जनमत की गंगा है
यह माध्यम उस स्वाधीन देश का, जिसकी ध्वजा तिरंगा है
हों कान पवित्र इसी सुर में, इसमें ही हृदय तड़पने दो
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो। **- गोपाल सिंह नेपाली**

हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे बड़ी, अच्छी और शिरोमणि है - ग्रियर्सन

मैं और मेरी लिखाई



सुश्री कीर्ति राज
आशुलिपिक ग्रेड-II

जब मरूँगी मैं, मेरी डायरी जला देना मेरे साथ में ही ।
कलम जो पड़ी है वहीं कहीं, थमा देना मेरे हाथ में ही ।

जितना लिखा, सारा ढूँढ़-ढाँढ़, बिछा देना मेरे पास में ही ।
स्याही की छींटों से रंग देना, चादर सफ़ेद वो रखना याद ही ।

गाने पड़े मेरे जितनों के पास में, रखना उन्हें खाली ड्राफ्ट में ही ।
पिन मेरे फ़ोन का पता है दोस्त को, व्हॉट्सअप में पड़े हैं क्राफ्ट कई ।

लिखा है जीवन में बहुत कुछ मैंने, पर कहाँ-कहाँ अब याद नहीं ।
मरने के बाद जो लग जाए हाथ लिखा मेरा, करना बर्बाद नहीं ।

जीवन बना बैठी लिखाई को, जीवन का मेरे अपवाद यही ।
देकर सुकून ज़माने को शब्दों से, खुद मुझे मेरी तलाश रही ।

दौड़ी हमेशा ही घोड़ी के जैसे, पर ख़ास यार मेरी घास रही ।
घास से यारी ? तो खाती क्या भला ? अच्छाइयाँ मेरी ख़राब रहीं ।

नशे में डूबी रही मैं हमेशा, पर नशा न कभी शराब रही ।
कभी नशा चढ़ा कलम का मुझे, तो कभी वो नशा किताब रही ।

डूबी संगीत के नशे में कैसे मैं, समझोगे कभी ये आप नहीं ।
नसीहत देते हो मुझे तो सुन भी लो, रिश्ते में तुम मेरे बाप नहीं ।

दो वर्तमान का सत्य सरल, सुंदर भविष्य के सपने दो
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो । - श्री गोपाल सिंह नेपाली

हृदय तरंगें खोल रही है, भावों को वह तोल रही है
मोल नहीं, अनमोल रही है, क्योंकि हिंदी बोल रही है । - जय राम सिंह

मानवता



श्रीमती सारिका ए साळवे
पत्नी - श्री अजिंक्य साळवे,
लेखापरीक्षक

मानवता का दिया जलाएँ, घर समाज में प्रेम जगाएँ।
नफरत की दीवारें तोड़ें, मिलकर खुशियाँ खूब मनाएँ।।

इंसान वही कहलाता है, जो काम औरों के आता है
सुख-दुख में साथ निभाएँ, मदद के लिए हम हाथ बढाएँ ।

भूखे को जो रोटी देता, प्यासे को जो पानी देता
दया हो आँखों में करुणा हो ऐसा सभ्य समाज बनाएँ ।

जात-पात का भेद न रक्खे, ऊँच-नीच का भाव न रक्खे
जीव-जीव का मान करें हम, प्रकृति से हम प्रेम बढ़ाएँ ।

हो अमीर कोई गरीब हो, उम्मीदों का साथ न छूटे
उठें तरंगें सबके दिल में, जीवन को सतरंग बनाएँ ।

मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा हो, या कोई पावन स्थल हो
सबसे ऊपर प्रेम हमारा मानवता की अलख जगाएँ ।

पेड लगाएँ, जल भी बचाएँ, पशु-पक्षियों को अपनाएँ
धरती माँ का मान बढाएँ, स्वच्छ सुंदर संसार बनाएँ ।

मुश्किल में जो साथ खडा हो, दिल से भावुक और बड़ा हो
रंग सभी हों हँसते-खिलते ऐसी हम तस्वीर बनाएँ ।



जब मैं युगांडियन बनूँगी !



सुश्री पूजा चौधरी
कनि. अनु. अधिकारी

मुंबई में रहते हुए मुझे तीन साल पूरे हो गए हैं । इस दौरान यहाँ मेरे कई दोस्त बने । कई सहकर्मियों के साथ मेरी बहुत अच्छी घनिष्ठता हो गई है । एक सहकर्मी ने तो मेरी छोटी उम्र के आधार पर मुझे अपनी धर्मपुत्री मान लिया है । मैं भी उन्हें अपने पिता के तरह ही मानती हूँ । हमारे कार्यालय का माहौल बड़ा ही दोस्ताना है । एक दिन की बात है । कार्यालय में हास्य-विनोद की हल्की-फुल्की बातें चल रही थीं । कुछ महिलाओं ने मेरे विवाह की बात छेड़ दी । उस दिन कार्यालय में मेरे धर्मपिता भी मौजूद थे, तो उन्होने अपना पितृधर्म निभाने के लिए मेरे विवाह की बात पर चिंता जताई और बड़े गंभीर हो गए । उन्हें देखकर मैं भी गंभीर हो गई । फिर उन्होंने जो कहा वो सुनकर मैं दंग रह गई । मज़ाक - मज़ाक में उन्होंने मेरा विवाह युगांडा में करने की बात कही और मैंने भी मज़ाक - मज़ाक में हामी भर दी । दिन बीतते गए और जब भी हम बोर होते तो युगांडा की बातें कर खूब हँसते ।

युगांडा पूर्वी अफ्रीका में स्थित एक बहुत ही सुंदर भू-आबद्ध देश है । अपनी अद्भुत प्राकृतिक सुंदरता और हरियाली के कारण इसे 'द पर्ल आफ अफ्रीका' भी कहा जाता है । युगांडा की जैव विविधता बेहद अद्भुत है । वहाँ सवाना के घास के मैदानों, उष्ण-कटिबंधीय वनों, पहाड़ों, झीलों और आर्द्रभूमियों जैसे अलग-अलग प्रकार के प्राकृतिक क्षेत्र एक ही देश में देखने को मिलते हैं । वहाँ 18,000 से अधिक वनस्पतियाँ और जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ दर्ज की गई है । युगांडा पक्षी प्रेमियों के लिए स्वर्ग जैसा है । वहाँ 1,000 से अधिक पक्षियों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं । युगांडा की राजधानी कंपाला है । कंपाला देश का सबसे बड़ा और आधुनिक शहर है । यहाँ की आधुनिक भाषाएँ अँग्रेज़ी और स्वाहिली है । देश में अधिकांश आबादी ईसाई धर्म को मानती है । थोड़ी संख्या मुस्लिम समुदाय की भी है । युगांडा के लोग आम तौर पर बहुत मिलनसार, विनम्र, दयालु और मेहमाननवाज़ स्वभाव के होते हैं । युगांडा में कई अलग-अलग जनजातियाँ जैसे - बंगाडा, बसोगा आदि हैं, लेकिन सभी मिलकर शांति से रहते हैं । यहाँ मेहमानों को बहुत सम्मान दिया जाता है । अगर आप उनके घर या देश जाएँगे तो वे आपको बेहद अपनापन और आदर देंगे । उनके जीवन में परिवार, रिश्तेदार और समुदाय का बहुत बड़ा स्थान होता है । वे मिल-जुलकर रहना पसंद करते हैं ।

कार्यालय में समय बीतता गया और हम बीच-बीच में युगांडा के बारे में बातें करते रहे । युगांडा में मेरे विवाह की इस कहानी में मेरे युगांडा जाने की तिथि, मेरे साथ जाने वाले लोग तथा सामान सब कुछ तय हो गया। मुझे युगांडा तक छोड़ने के लिए स्वयं मेरे धर्मपिता का वहाँ जाना भी तय हो गया । मेरे धर्मपिता ने मुझे युगांडा भेजने की बात इतनी बार कही कि युगांडा की बातें मेरे अवचेतन मन में बैठ गई और मैं युगांडा के बारे में सब-कुछ जानने के लिए उत्सुक हो गई । मैं गूगल पर वहाँ की संस्कृति, खान-पान, पहनावा आदि के बारे में पढ़ने लगी । मुझे वहाँ की संस्कृति के बारे में पढ़कर बहुत आनंद आने लगा । मैं सोचने लगी कि युगांडा के लोग कैसे होंगे, वहाँ के लोग अपना जीवन-यापन कैसे करते होंगें । मुझे प्रकृति का सौंदर्य बहुत आकर्षित करता है, अत: वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य के बारे में पढ़ कर मुझे वहाँ जाने की इच्छा होने लगी । यह बहुत विचित्र प्रतीत होता है, लेकिन मैं कभी-कभी वहाँ की फ्लाइट चेक करने लगी । मैं सोचने लगी कि कैसा होता यदि मैं एक युगांडियन होती।

युगांडा की संस्कृति की बात करें तो वह बहुत ही समृद्ध, रंगीन और विविध है । यहाँ पचास से अधिक अलग-अलग जनजातियाँ रहती है जिनमें बंगाडा सबसे बड़ी है । इतनी विविधता होने के बाद भी यहाँ के लोगों में आपसी एकता और सांस्कृतिक जुड़ाव है । संगीत और नृत्य युगांडा के जीवन का सबसे अहम हिस्सा है । हर त्योहार, शादी और खुशी के मौके पर पारंपरिक नृत्य किया जाता है । बंगाडा का बकिम्बा नृत्य, इतसो का अजूरे नृत्य यहाँ के कुछ लोकप्रिय नृत्य है । गोमेसी और कांजु वहाँ के पारंपरिक पोशाक हैं । गोमेसी महिलाओं की पारंपरिक पोशाक है । यह चमकीले रंगों वाली एक लंबी पोशाक होती है, जिसके कंधे उभरे हुए होते हैं और कमर पर एक बड़ा स्कार्फ बंधा होता है । कांजु पुरुषों का पारंपरिक पहनावा है । यह सफेद या क्रीम रंग का एक लंबा कुर्ता जैसा गाउन होता है, जिसे विशेष अवसरों पर पहना जाता है ।



युगांडा की खान-पान की बात करें तो वहाँ मांसाहारी भोजन ज्यादा पसंद किया जाता है । मटूक, पोशो, लुवोम्बो वहाँ के प्रसिध्द व्यंजन हैं । शाकाहारी भोजन भी वहाँ आसानी से मिल जाता है । यदि युगांडा में किसी खास या सम्मानित मेहमान को तली हुई टिड्डियां परोसी जाएँ, तो इसे बहुत सम्मान और आदर का संकेत माना जाता है ।

युगांडा के बारे में मुझे अब तक जितनी भी जानकारी मिली है उसके आधार पर मैं कह सकती हूँ कि यह एक प्राकृतिक देश है । मनुष्य के तथाकथित भौतिक-विकास की विनाश-लीला अभी इस देश को गिरफ्त में नहीं ले पाई है । लोग प्रकृति से प्रेम करते हैं । प्रकृति का नियम है कि जो प्रकृति से प्रेम करता है, प्रकृति भी उससे प्रेम करती है । इस कारण युगांडा के लोग बहुत ही खुशहाल रहते हैं । वैसे मैं स्वभाव से घुमक्कड़ हूँ । विशेषकर मैं वैसी जगहों पर जाती रहती हूँ जहाँ मैं स्वयं को प्रकृति के बिल्कुल पास पाऊँ । प्रकृति-प्रेम मेरी जीवनचर्या और बौद्धिकता का अहम हिस्सा बन गया है । मैं अक्सर सोचती रहती हूँ कि प्रकृति ने मनुष्य को कितनी सुंदर धरती सौंपी थी, मनुष्य ने अपनी लालच के कारण उसे क्या से क्या बना दिया है !

मुझे यात्रा करना बेहद प्रिय है । किसी नई जगह जाकर वहाँ की संस्कृति, जीवन शैली, खान-पान की खोज करना मुझे बहुत पसंद है । मैं जब भी नई जगह जाती हूँ, बहुत ही जीवित महसूस करती हूँ या यों कहूँ कि मैं उस क्षण में खुद के सबसे करीब होती हूँ । मेरी इच्छा-सूची में देश - विदेश के कई जगह है जहाँ मुझे कभी न कभी जाना है । इस सूची में अब एक नई जगह जुड़ गई है - युगांडा । युगांडा में मेरा विवाह करना भले ही एक काल्पनिक कहानी हो, लेकिन मैं जीवन में एक बार अवश्य युगांडा जाउँगी और वहाँ जाकर कुछ दिनों के लिए ही सही एक युगांडियन की तरह जीवन बिताउँगी ।

यह संस्कृत की बेटी, सम्मानित संसार ।
यह राष्ट्र की पहचान, शब्दावली भंडार ।।
यह मातृभाषा मेरी, हाँ करता हूँ सम्मान ।
यह राजभाषा हिंदी, हिंदी का गुणगान ।। **- शोभनाथ सिंह यादव**

इस देश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक अथवा ग्रामीण, सभी हिंदी को समझते हैं - राहुल सांकृत्यायन

योग्यता का प्रतिफल



श्री आकाश भिंगारदिवे
अ.आँ.प्र.प्र.

एक बड़ी कंपनी में किशोर नाम का एक बेहद योग्य और ईमानदार कर्मचारी काम करता था । वह हर दिए गए काम को समय से पहले और बेहतरीन तरीके से पूरा करता था । कंपनी के उसी विभाग का मैनेजर, अरमान, एक अयोग्य और चापलूस अधिकारी था । अरमान को काम की समझ कम थी, लेकिन दूसरों का श्रेय चुराने में वह माहिर था । किशोर की दिन-रात की मेहनत को अरमान हमेशा सीईओ के सामने अपनी उपलब्धि बताकर पेश करता था । किशोर इस बात को जानता था, लेकिन वह बिना शिकायत सिर्फ अपने काम पर ध्यान देता था ।

एक दिन कंपनी को एक बहुत बड़ा और जटिल प्रोजेक्ट मिला । इस प्रोजेक्ट की सफलता पर कंपनी का भविष्य टिका था । अरमान ने हमेशा की तरह किशोर को काम पर लगा दिया । किशोर ने अपनी पूरी योग्यता से एक शानदार प्रेजेंटेशन और बिजनेस प्लान तैयार किया । मीटिंग के दिन, अरमान ने वह प्रेजेंटेशन किशोर के हाथ से ले लिया और खुद बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के सामने पेश करने चला गया । किशोर चुपचाप पीछे की सीट पर बैठ गया ।

अरमान ने प्रेजेंटेशन शुरू किया । शुरुआती कुछ स्लाइड्स उसने रटी-रटाई भाषा में पढ़ दीं । लेकिन तभी कंपनी के सीईओ ने बीच में ही एक तकनीकी और पेचीदा सवाल पूछ लिया । अरमान के पसीने छूट गए । वह हकलाने लगा, क्योंकि उसने खुद कभी काम किया ही नहीं था । सीईओ भाँप गए कि दाल में कुछ काला है । उन्होंने तुरंत पूछा, "यह प्रोजेक्ट वास्तव में किसने तैयार किया है ?"

अरमान ने डरते हुए किशोर की तरफ इशारा किया । सीईओ ने किशोर को आगे बुलाया । किशोर ने न सिर्फ उस सवाल का सटीक जवाब दिया, बल्कि पूरे प्रोजेक्ट की बारीकियों को इतनी सहजता से समझाया कि पूरी मीटिंग तालियों से गूँज उठी ।

अगले दिन किशोर सीधे मैनेजर की कुर्सी पर बैठा था और अरमान नोटिस-पीरियड पर चला गया था ।



राष्ट्रभाषा के बिना आज़ादी बेकार है - अवनीन्द्र कुमार विद्यालंकार

हनुमानजी और तुलसीदासजी का संबंध



श्री प्रवीण पुंजाजी नाफड़े
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

संस्कृत में एक श्लोक हैः-

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः॥

हनुमान कलियुग में सप्तचिरंजीवियों में से एक माने जाते हैं । हनुमानजी और गोस्वामी तुलसीदासजी का संबंध गुरु, सेवक और आराध्य के रूप में अत्यंत पवित्र और प्रगाढ़ माना जाता है। ऐसा विश्वास है कि हनुमान जी की कृपा से ही तुलसीदास को श्रीराम के दर्शन हुए और उन्होंने श्रीरामचरितमानस तथा हनुमान चालीसा जैसी अमर रचनाएँ की ।

कथाओं के अनुसार, तुलसीदास जी को वाराणसी में एक प्रेत (बेताल) मिला था जिसने उन्हें हनुमान जी का पता बताया । तुलसीदास जी हनुमान जी से मिलने संकटमोचन मंदिर के पास गए । वहाँ एक कुष्ठ रोगी को उन्होंने कथा सुनते देखा । तुलसीदास जी ने पहचान लिया कि वही हनुमान जी हैं । उन्होंने उनके चरण पकड़ लिए। जब तुलसीदास ने हनुमान जी से भगवान राम के दर्शन कराने की प्रार्थना की, तब हनुमान जी ने उन्हें चित्रकूट जाने का निर्देश दिया ।

चित्रकूट के रामघाट पर हनुमान जी की कृपा से ही तुलसीदास जी को घोड़े पर सवार भगवान राम और लक्ष्मण के दर्शन हुए । दोनों तुलसीदास जी के पास आकर बैठ गए और तुलसीदास जी उन्हें कोई भक्त समझकर तिलक लगाने लगे । वहीं पास के पेड़ पर एक तोते के रूप में स्वयं हनुमान जी बैठे थे । तुलसीदास को तिलक लगाते देख वह तोता बोलने लगाः-

"चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीड़ । तुलसीदास चंदन घिसै तिलक लेत रघुवीर ।।"

तोते के ऐसा बोलने पर तुलसीदास जी अपने आराध्य को पहचान गए और उनके चरणों में गिर पड़े ।

एक बार बाबा तुलसीदास जी सुबह गंगा स्नान के लिए जा रहे थे । उसी समय एक स्त्री, जिसके पति की मृत्यु हो गई थी, को सजा-धजा कर गाँववाले सती करने ले जा रहे थे । सती होने से पहले स्त्री को सभी का आशीर्वाद लेना पड़ता था । रास्ते में तुलसीदास जी भी दिख गये । तब वह स्त्री उनके पाँव छूने के लिए नीचे झुकी। तुलसीदास जी ने आशिर्वाद देते हुए कहा - "अखंड सौभाग्यवती भव !" उस स्त्री के साथ चलनेवाले लोगों ने कहा - "बाबा इसके पति की तो मौत हो चुकी है और आप इसे अखंड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दे रहे हैं ? अपने आशीर्वाद की मर्यादा रखने के लिए अब आपको इसके पति को जीवित करना होगा ।"

तुलसीदास जी ने बहुत मना किया कि वे कोई सिद्ध संत-वंत नहीं हैं । लेकिन गाँववाले नहीं माने । फिर तुलसीदास जी ने कहा ठीक है, मुझे मृत शरीर के पास ले चलो और सभी अपनी-अपनी आँखों को बंद कर लो । बाबा तुलसीदास जी ने अपने आराध्य प्रभु श्रीराम जी से प्रार्थना की और कहा कि अब आप ही मेरी लाज रख सकते हैं । कुछ ही क्षणों में वह मृत व्यक्ति राम-राम बोलकर उठ गया । कुतूहलवश एक व्यक्ति ने आँखें खोल दीं थीं, वह अंधा हो गया ।

इस तरह तुलसीदास जी की ख्याति बादशाह अकबर के दरबार तक पहुँच गई । उन्होंने तुलसीदास जी को आगरा बुलाया । राजा टोडरमल तुलसीदास जी के नजदीकी थे । उन्होंने ही अकबर को तुलसीदास जी के चमत्कार के बारे में बताया था ।

बादशाह अकबर ने तुलसीदास जी से कोई चमत्कार दिखाने को कहा । लेकिन तुलसीदास जी ने कहा कि वे कोई जादूगर नहीं हैं जो चमत्कार करके लोगों का मनोरंजन करेंगे । इस बात पर अकबर नाराज हो गया और उन्हें कारागार में बंद करने का आदेश दे दिया ।

कारागार में तुलसीदास जी ने हनुमान जी का स्तवन किया । वे प्रतिदिन एक छंद लिखते और उसका गायन करते । इस तरह चालीस दिनों में उन्होंने चालीस छंद लिखे जो '**हनुमान-चालीसा**' नाम से अमर रचना के रूप में मानित, पूजित और वंदित है । इतिहासकार कहते हैं कि कुछ दिनों में अकबर की राजधानी में लाखों बंदर पहुंच गए । वे बंदर अकबर के महल, रनिवास, बगीचे में घुसकर उत्पात मचाने लगे । चारों तरफ विध्वंस ही विध्वंस होने लगा । अकबर और उसकी प्रजा इन सबसे परेशान हो गई । तब अकबर के क़ाजी ने कहा जिस संत को आपने बंदी बनाया है उसे रिहा कर दें । तब बादशाह अकबर ने तुलसीदास जी को रिहा करते हुए उनसे माफी माँगी और सीताराम की छविवाली मुद्रा भी चलाई ।



प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती ।

- नेताजी सुभाषचंद्र बोस

मैं वारी जावाँ !



श्रीमती मनीषा शेंडगे
स.ले.प.अ.

पंढरपुर की वारी महाराष्ट्र की 800 साल पुरानी एक प्रसिद्ध पैदल तीर्थयात्रा है । इसमें लाखों भक्त (जिन्हें वारकरी कहते हैं) संत ज्ञानेश्वर और संत तुकाराम की पालकियों के साथ आषाढ़ी एकादशी पर पंढरपुर पहुंचकर भगवान विट्ठल (पांडुरंग अथवा विठोबा) के दर्शन करते हैं । यह यात्रा भक्ति, समानता और सामाजिक एकता का अनूठा प्रतीक है । मान्यता है कि पुंडलीक नाम के भक्त की माता-पिता के प्रति भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान कृष्ण (विट्ठल) पंढरपुर आए और एक ईंट पर कमर पर हाथ रखकर खड़े हो गए।

बहुत दिनों से मेरे मन में इच्छा थी कि एक दिन वारकरियों के साथ वारी करने का अवसर मिले। इस वर्ष वह इच्छा पूरी हुई । मुझे अपने रिश्तेदारों और मित्रों के परिवारों के साथ पुणे में वारकरियों के साथ लगभग 14 किमी पैदल चलने का सौभाग्य मिला ।

महाराष्ट्र के अलग-अलग जगहों से संतों की पालकियाँ इस पवित्र यात्रा में शामिल होती हैं । सभी श्रद्धालु अपने भगवान विट्ठल को पंढ़रपुर में मिलने के लिए पैदल यात्रा करते हैं । इनमें संत ज्ञानेश्वर माउली की पालकी और संत तुकाराम महाराज की पालकी सबसे प्रसिद्ध पालकियाँ हैं । संत ज्ञानेश्वर महाराज की पालकी पुणे के पास आळंदी से और संत तुकाराम महाराज की पालकी देहू (पुणे के पास) से आषाढ़ मास में शुरू होती है । पालकियों के साथ हजारों दिंडियाँ (भक्तों का दल) चलती हैं । प्रत्येक दिंडी का अपना क्रमध्वज रहता है और सभी वारकरी अपनी-अपनी दिंडी के साथ ही चलते हैं । आषाढ़ी एकादशी के दिन सभी पालकियाँ पंढरपुर पहुंचती हैं, जहाँ भक्तगण भीमा नदी में स्नान कर विट्ठल-रुक्मिणी के दर्शन करते हैं।

सुबह हम स्वारगेट (पुणे शहर में एक जगह) से वारी में शामिल हुए । वारी में शामिल होने के पहले माथे पर चंदन का तिलक लगाया गया । मैं श्रद्धा के साथ वारकरियों के बीच चलने लगी । चारों ओर से 'जय हरि विट्ठल', 'जय हरि विट्ठल' नाम के जयकारे गूँज रहे थे । राग, मृदंग और अभंग की धुन पर पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया था । वारी के दौरान हमें संत तुकाराम महाराज की पावन पालकी के दर्शन हुए । पूरा वातावरण 'ज्ञानोबा तुकाराम' और 'जय जय राम कृष्ण हरि' के जय घोष से गुँजायमान था ।

पालकी का समय और मार्ग पहले से ही तय होते हैं । शहरों में, गाँवों में, वारकरियों को चाय, नाश्ता, भोजन, रहने की व्यवस्था की जाती है । वारी में जगह-जगह चिकित्सा शिविर, एम्बुलेंस सेवा आदि उपलब्ध कराई जाती है । यह सभी माउली (भगवान शिव का एक नाम, तीर्थयात्रियों को भी आदर से माउली कहा जाता है) की सेवा मानकर निःशुल्क और निःस्वार्थ भाव से की जाती है । वारी में स्वच्छता का भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

वारी में सब एक समान थे, न कोई अमीर और न कोई गरीब, न कोई बड़ा और न कोई छोटा - सभी एक दूसरे के साथ चलने में जुड़े जा रहे थे । एक दूसरे को माउली कहकर मुस्कुराहटभरा सम्मान दे रहे थे । इससे एक अपनापन महसूस हो रहा था ।

जब मुझे पता चला कि 14 किमी पैदल चलना है, तो मैं थोड़ी चिंतित थी कि क्या मैं इतना लम्बा रास्ता पैदल चल पाउँगी ? शुरुआत में यह दूरी बहुत कठिन लग रही थी । परंतु वारी का माहौल, विट्ठल नाम का जयघोष, भजन, वारकरियों का उत्साह ... इन चीजों से मेरे कदम अपने-आप आगे बढ़ते गए और मैंने पदयात्रा सफतलतापूर्वक पूरी कर ली ।

एक दिन की वारी केवल पदयात्रा नहीं बल्कि भक्ति, सेवा, समानता और सामूहिक जीवन का अनुभव है । अनेक लोग मानते हैं कि जीवन में कम से कम 'एकदातरी वारी अनुभवावी' अर्थात् जीवन में कम से कम एक पंढ़रपुर की यात्रा का अनुभव लेना चाहिए, क्योंकि यह यात्रा मन को शांति, श्रद्धा, सकारात्मक ऊर्जा और समाधान से भर देता है ।

मुझे नहीं पता कि मैं भगवान से मिली या नहीं, पर इतना ज़रूर कह सकती हूँ कि भगवान विट्ठल की अटूट भक्ति में लीन, सरल, भोले और विनम्र वारकरियों के बीच रहकर सच्ची श्रद्धा सेवा और मानवीय करुणा भाव को मैने बहुत निकटता से महसूस किया । उनके साथ बिताया हुआ समय मेरे जीवन का अनमोल और अविस्मरणीय अनुभव बन गया ।



हिंदी हिंद महासागर है हिंदी कंचनजंगा
खेत-खेत में बहती है यह जन-गण-मन की गंगा
तमिल तेलगू मलयालम जो कन्नड़ उड़िया बंगा
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण उच्छल जलधि तरंगा
फलें सभी भाषाएँ हिन्दी की अभिलाषा है
मेरी भाषा हिंदी भाषा सबकी भाषा है **- श्री संतोष आनंद**

"आती क्या खंडाला ?" – बारिश, बादल और वेस्टर्न घाट्स !



सुश्री कीर्ति राज
आशुलिपिक ग्रेड-II

90s में यह सिर्फ़ एक गाना था... लेकिन जुलाई के आखिर में मैंने इसका जवाब खुद जाकर दिया – "हाँ भाई, आ गई !" मुंबई की भागती-दौड़ती ज़िंदगी और सुबह की नींद से रोज़ की लड़ाई ... इन सबसे कुछ घंटों का ब्रेक लेना ज़रूरी था । इसलिए एक सुबह, जब दुनिया अभी अलार्म के साथ बहस कर रही थी, हम अंधेरे में ही निकल पड़े । आँखों में चमक थी, दिल में एक्साइटमेंट और दिमाग में सिर्फ़ एक ही ख़याल–आज वेस्टर्न घाट्स देखने हैं, वह भी मॉनसून में !

ट्रेन वाला सफ़र... जहाँ खिड़की ही नेटफ्लिक्स बन गई !

जैसे ही ट्रेन आगे बढ़ी, बाहर के नज़ारे शुरू हो गए । हर पाँच मिनट में मेरा एक ही डायलॉग था – "अरे इधर देखो !" "अरे उधर देखो !"

बाकी लोग शायद सोच रहे होंगे कि पहली बार पेड़ देख रही हूँ । सच बताऊँ तो ऐसा लग रहा था जैसे बादलों ने आसमान का किराया छोड़कर सीधे ज़मीन पर पीजी ले लिया हो । पहाड़ों पर बादल ऐसे टहल रहे थे जैसे सुबह-सुबह कॉलोनी में अंकल वॉक करने निकले हों । एक पल तो ऐसा लगा कि अभी धुएँ जैसे बादलों में से नारद मुनि "नारायण... नारायण..." करते हुए उतरेंगे और पूछेंगे – "वत्स, स्वर्ग का रास्ता पूछ रही हो या पहुँच ही गई ?"

लोनावला पहुँचे ... और पहले पेट पूजा ! कहते हैं खाली पेट जीव को सिर्फ़ गुस्सा आता है, इसलिए हमने पहले भरपेट भोजन किया । क्योंकि प्रकृति का आनंद लेने के लिए भी पेट का सपोर्ट ज़रूरी है । इसके बाद कार में बैठे और निकल पड़े... सीधे स्वर्ग की ओर ।

लोनावला लेक और वह ब्रिटिश ज़माने का पुल

सबसे पहले पहुँचे लोनावला लेक । उसके पास बना ब्रिटिश काल का पुल पानी को ऐसे रोककर खड़ा था जैसे कोई सिक्योरिटी गार्ड कह रहा हो – "भाई... लाइन से ! सबको नीचे जाने का मौका मिलेगा ।" हर तरफ़ हरियाली... पानी... धुंध... और वह ताज़ी हवा, जो दिल्ली वालों के लिए किसी लग्ज़री चीज़ से कम नहीं ।

झरने इतने कि गिनते-गिनते हार मान लो !

रास्ते में इतने झरने मिले कि लगा पहाड़ों ने सारे शॉवर एक साथ ऑन कर दिए हों ।

लेकिन जितनी खूबसूरती थी, उतना ही रौद्र रूप भी ।

भूशी डैम...

जहाँ लोग एडवेंचर नहीं, किस्मत टेस्ट कर रहे थे! भूशी डैम पहुँचे तो देखा लोग तेज़ बहते पानी में नहा रहे हैं । मैं दूर खड़ी सबको देख रही थी और दिमाग में बस एक ही फ़िल्म चल रही थी – "भाई... अभी एक एक्स्ट्रा पावर वाली लहर आएगी, और सबको फ्री में नीचे तक ड्रॉप कर देगी !" मैंने पानी को देखकर मन ही मन कहा – "भाई, मैं दूर से ही तुम्हारी सुंदरता की फ़ैन हूँ ... दोस्ती यहीं तक ठीक है ।"

टाइगर पॉइंट...

हवा इतनी तेज़ कि रेनकोट ने कहा – "आज मेरी मेहनत वसूल !" फिर पहुँचे टाइगर पॉइंट । बारिश... धुंध... बादल... और ऐसी हवा कि मेरा रेनकोट भी शायद सोच रहा होगा – कई बार तो हवा इतनी तेज़ आई कि लगा अगर एक कदम और आगे बढ़ी तो सीधे बादलों के साथ फ़ोटो खिंच जाएगी ।

खंडाला व्यू पॉइंट /ड्यूक्स नोज़...

वाह ! फिर आया ड्यूक्स नोज़ । ऊपर से जो नज़ारा दिखा ... उसके लिए "वाह" शब्द भी छोटा पड़ जाए। नीचे बादल... बीच में पहाड़... चारों तरफ़ हरियाली... और हम बस खड़े थे... बिना कुछ बोले । कभी-कभी प्रकृति इतनी खूबसूरत होती है कि देखनेवाले के पास सिर्फ़ एक ही शब्द बचता है ! मैंने हमेशा उत्तराखंड के पहाड़ देखे हैं। वहाँ के पहाड़ अलग हैं – ऊँचे, भव्य, देवभूमि वाले एहसास के साथ । लेकिन वेस्टर्न घाट्स ... अरे भाई, ये तो बिल्कुल अलग ही वाइब हैं । ये पहाड़ मॉनसून में ऐसे तैयार होकर आते हैं जैसे धरती ने खुद पर एचडी ग्रीन फ़िल्टर लगा लिया हो । इतनी हरियाली कि आँखों को भी रिफ्रेश बटन मिल जाए । ये पहाड़ चिल्लाते नहीं ... ये सुकून से मुस्कुराते हैं । ये आपको इम्प्रेस करने की कोशिश नहीं करते ... बस चुपचाप खड़े रहते हैं, और आप खुद इनके प्यार में पड़ जाते हो । बारिश की हर बूँद इनके ऊपर गिरकर ऐसा लगता है जैसे किसी कलाकार ने कैनवास पर नई पेंटिंग बना दी हो । सच कहूँ... अगर उत्तराखंड के पहाड़ भगवान का भव्य मंदिर हैं... तो वेस्टर्न घाट्स भगवान का सबसे खूबसूरत रेन एडिशन वॉलपेपर हैं ।

आखिर में ... ऑफिस की फ़ाइलें फिर खुल जाएँगी । मेल्स फिर आ जाएँगी । मीटिंग्स फिर होंगी । लेकिन बारिश में भीगे वेस्टर्न घाट्स, बादलों से लिपटे पहाड़, झरनों की आवाज़ और वह सफ़र... ये सब दिमाग में ऐसे सेव हो गया है जैसे ज़िंदगी का परमानेंट वॉलपेपर ।

और हाँ...अगर कोई फिर पूछे – "आती क्या खंडाला ?" तो मेरा जवाब रहेगा– "एक बार नहीं... हर मॉनसून में बुला लेना !"



उन लोगों में से हूँ जो सोचते हैं कि केवल हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है - लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

यह जीवन है



श्री नवनाथ बनसोडे
अ.बहुकार्य कार्मिक

बड़े से टीवी स्क्रीन पर क्रिकेट का मैच चल रहा था । गेंदबाज ने गेंद डाली और विराट कोहली ने गेंद को उठाकर खेल दिया । गेंद गेंद सीमा रेखा के बाहर चली गई और विराट का शतक पूरा हो गया । यह देखकर बीयर बार मे बैठे लोग जश्न मनाने लगे । सभी लोग क्रिकेट पर बात कर रहे थे । वहीं एक कोने में बैठा आनंद अपने विचारों में मग्न था । उसका ध्यान क्रिकेट की तरफ नहीं था । अचानक वह शराब की बोतल से बात करने लगा - "तुम पास होती हो तो अच्छा लगता है, तुम्हारे बिना किसी का सहारा नहीं मिलता । तुम्हें लेने के बाद दुख कम होता है, मन बहुत शांत हो जाता है । मन में चल रही घुटन पर मरहम लगाने का काम करती हो, इसीलिए तुम्हें लेने के बाद अच्छा लगता है...।"

आनंद ने वेटर को अपने पास बुलाया । वेटर ऑर्डर लेकर वहाँ से चला गया । आनंद सिगरेट पीते हुए आँखें झपकाने लगा । तभी उसका पुराना दोस्त संग्राम आकर बैठ गया ।

- "अरे कब आए ? बहुत दिनों बाद दिखे हो, लोगे क्या थोड़ी ? इतने दिनों बाद मिले हो दोस्त, लेनी तो पड़ेगी ही। (वेटर से) मेरे दोस्त के लिए भी एक लेकर आओ ।" वेटर ने दो बोतल टेबल पर रख दिया । आनंद ने दो पेग तैयार किया और एक को संग्राम के आगे खिसका दिया ।

- "दोस्त, मैं अब नहीं ले सकता... कभी भी नहीं । तुम क्यों लेते हो इतनी ?"

एक घूँट अंदर लेते हुए आनंद ने कहा - "मित्र ! क्या बताऊँ मन का दुख । हल्का होने के लिए थोड़ा पीता हूँ । माता-पिता, पत्नी, बच्चे – सबकी ज़िम्मेदारी मुझ पर आ पड़ी है। कमाने वाला अकेला मैं हूँ, कैसे होगा ? माँ की दवाइयाँ, पिताजी का दर्द, पत्नी की जिद, बच्चों का स्कूल ... इतनी कम तनख्वाह में नहीं संभलता । मित्र ! तनख्वाह से ज़्यादा तो महीने का खर्च ही हो जाता है। किससे माँगूँ ? घर चलाने के लिए जब से मुंबई आया हूँ, तब से मैं खुद को ही भूल गया हूँ । मैं सिर्फ पैसे कमाने की मशीन बन गया हूँ । कई जगहों पर इंटरव्यू दिए, इतना पढ़ने के बाद भी नौकरी नहीं मिली । इसलिए गार्ड (चौकीदार) की नौकरी कर रहा हूँ। उसमें भी ठेकेदार (कांट्रैक्टर) का हिस्सा देना पड़ता है । बड़ी दयनीय स्थिति है ... सिर्फ ज़रूरतें पूरी कर रहा हूँ, खुद के लिए जीना ही भूल गया हूँ। (संग्राम उसकी बातें सुन रहा था ।)"

- "मित्र ! इस परेशानी का उपाय शराब नहीं है ।"

- "अपने मन की हालत क्या बताऊँ तुझे । मन मारकर मुंबई में रहना पड़ता है । कभी-कभी मन में आता है कि आत्महत्या कर लूँ । जीना बेकार हो गया है, दुख बहुत ज़्यादा है । हाय ! किसी से बोलते भी नहीं बनता ।"

- "मेरे भाई ! सच कहूँ तो भले ही पूरे रास्ते पर काँटे बिखरे हों, फिर भी हमारे लिए कहीं न कहीं एक रास्ता खुल ही जाता है। उस रास्ते पर अगर ईमानदारी और मेहनत से आगे बढ़ा जाए तो सफलता के शिखर पर पहुँचने का मार्ग निश्चित रूप से मिलता है । मुझे भी यह बात देर से समझ में आई ।"

अचानक बिजली चली गई । शराब पीनेवाले लोग शोर मचाने लगे । थोड़ी देर में बिजली फिर से आ गई। पर यह क्या ? आनंद के सामने संग्राम नहीं था । आनंद दुखी हो गया - "कहाँ गया मेरा दोस्त ?" शराब के नशे में वह टेबल से उठा और संग्राम के घर की दिशा में निकल पड़ा । संग्राम का घर सुनसान पड़ा था । आनंद गेट खोलकर घर के अंदर गया । दरवाज़ा एक तरफ खुला हुआ था । आनंद घर के सामने खड़ा होकर संग्राम को आवाज़ देने लगा । अचानक सामने बेहद मायूस चेहरेवाली महिला उसके सामने आई । आनंद ने उस महिला से पूछा - "संग्राम कहाँ है?" महिला कोई उत्तर दिए बिना सीढ़ी से नीचे उतरने लगी । उसी दौरान आनंद को उसके पीछे की तरफ दीवार पर संग्राम का फोटो दिखा । फोटो पर हार चढ़ा हुआ था । आनंद के पैरों तले ज़मीन खिसक गई । वह महिला के चेहरे की तरफ देखने लगा - माथे पर कुंकुम (बिंदी/सिंदूर) नहीं था । इस दृश्य ने उसका पूरा नशा ही उतार दिया । महिला ने धीमी आवाज़ मे कहा – "आठ दिन पहले वह दुनिया से चले गए ।"

आनंद के मन में खलबली मच गई । उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या बोले, वह एकदम शांत हो गया । उसके मन में सवालों की बौछार होने लगी - "फिर मुझे मिला वह कौन था?" उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था । वह बिना कुछ बोले वहाँ से निकल गया । गेट के बाहर जाने पर उसने मुड़कर अपने मित्र संग्राम के घर को एक बार फिर से देखा । अचानक अँधेरे में उसके कंधे पर किसी ने हाथ रखा । आनंद ने पीछे देखा और संग्राम को देखकर वह बुरी तरह डर गया । संग्राम ने कहा - "मैंने भी तुम्हारी तरह ही सोचा था । उसी बियर बार में मेरे मन में भी विचार आया था । मैं भी उसी टेबल पर बैठा था । मैने डिसीजन लिया ... आज़ाद हो गया । सामने जो पेड़ देख रहे हो, उसी से लटक गया । अब मैं पत्नी-बच्चा, माता-पिता सबको छोड़ आया हूँ । मेरा घर सूना हो गया है । अब बस दूर से ही उन्हें देखना है ।"

आनंद संग्राम की बातें सुन रहा था । वह उसकी तरफ एकटक देख रहा था - "तुम इस दुनिया में पैदा हुए हो, मेरे जैसा विचार मत करना. जो मेरे साथ हुआ है, वह तुम्हारे साथ भी होगा, तुम्हें रास्ता जरूर मिलेगा आनंद।" इतना कहते हुए पलक झपकते ही संग्राम गायब हो गया । आनंद डर के मारे थर-थर काँपने लगा । किसी तरह गिरते-उठते वह अपने घर पहुँचा ।

तड़के सुबह का समय था । पेड़ों पर पक्षी चहचहा रहे थे । आनंद जगा और बाहर एक कुर्सी पर जाकर बैठ गया । संग्राम का एक-एक शब्द उसके दिमाग में गूँज रहा था । घर में शांति छाई हुई थी । आनंद की पत्नी, बच्चे, माँ और पिता गहरी नींद में सोए रहे थे । आनंद की दृष्टि एक पेड़ पर गई जहाँ एक बड़ा घोंसला था । तेज़ हवा में घोंसला घूम रहा था । एक गोरैया बुने हुए जाल में पैर फँसाकर अपनी चोंच से घोंसले को बुन रही थी । वह घोंसले को और भी सुंदर बना रही थी । हवा बहुत तेज़ थी, पर गोरैया पीछे नहीं हटी । वह अपना काम पूरी ईमानदारी से कर रही थी । उसकी मेहनत देखकर आनंद के चेहरे पर संतोष और एक चमक आ गई ।

आनंद ने बियर बार का रास्ता छोड़ दिया था । उसके चेहरे पर अब निराशा की जगह आशा और उमंग के भाव चमक रहे थे । समय बीतता गया । कुछ वर्षों के बाद आनंद ने मुंबई में ही अपना एक छोटा सा व्यवसाय स्थापित कर लिया । उसका बच्चा स्कूल जा रहा था । पत्नी, माता-पिता.. सब खुश थे । परिवार की खुशी जब-जब आनंद देखता, उसका मन जीवन के प्रति श्रद्धाभाव से भर जाता ।

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध है - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

जब घड़ी रुक गई !



सुश्री प्रिया सिंह
लेखापरीक्षक

जिला कार्यालय का वह भवन शहर के सबसे पुराने सरकारी भवनों में गिना जाता था - लाल ईटों से बना, ऊँचे मेहराबोंवाला और चौड़े बरामदों से चिरा हुआ । बरसों की धूप, वर्षा और ऑधियों ने उसकी दीवारों का रंग फीका कर दिया था, पर उसकी गरिमा अब भी वैसी ही थी । ऐसा लगता था माने वह भवन केवल ईंट-पत्थरों से नहीं, बल्कि हजारों लोगों की उम्मीदों से बना हो ।

मुख्य द्वार के ठीक ऊपर एक विशाल गोल घड़ी टँगी थी। पीतल के किनारोंवाली वह घड़ी कभी पूरे कार्यालय की धड़कन मानी जाती थी । वर्षों पहले जब मोबाइल फोन नहीं थे, लोग दूर से ही उसकी सुइयों को देखकर अपनी चाल तेज कर लेते थे । कर्मचारी अपनी कलाई की घड़ियों को उसी से मिलाते थे । आगंतुकों को लगता था कि यदि इस घड़ी के भीतर समय चल रहा है, तो उनके काम भी अवश्य आगे बढ़ेंगे ।

समय बदला, अब हर हाथ में मोबाइल था, हर मेज़ पर कंप्यूटर था । डिजिटल घड़ियाँ दीवारों पर चमकती रहती थी । किसी ने महसूस भी नहीं किया कि पुरानी पड़ी धीरे-धीरे लोगों की स्मृतियों से उतरती जा रही है । धूल उसकी सुइयों पर जमने लगी । काँच पर समय की महीन खरोचे उभर आई । कबूतरों ने उसके ऊपर अपना बसेरा बना लिया । फिर भी वह चुपचाप चलती रही - जैसे कोई बूढा प्रहरी, जो जानता हो कि उसकी और अब कोई नहीं देखता, फिर भी वह अपना कर्तव्य निभाता रहता है ।

एक सोमवार की सुबह, ठीक 10 बजकर 17 मिनट पर, उसकी सुइयाँ अचानक रुक गई । किसी ने आवाज नहीं सुनी । कोई झटका नहीं लगा । बस घड़ी का समय थम गया । कार्यालय की भागदौड पहले की तरह चलती रही । कर्मचारी अपनी सीटों पर पहुँच गए । टाइपिंग की आवाज़े गूँजने लगी । चायवाले ने हमेशा की तरह आवाज़ लगाई - "चाय..." किसी ने ऊपर देखा और सहजता से कहा - "अरे, घड़ी बंद हो गई है ।" दूसरे ने मोबाइल देखते हुए जवाब दिया - "अब कौन उसे देखता है?" और बात वहीं समाप्त हो गई ।

लेकिन अगले कुछ दिनों में कुछ अजीब होने लगा । जो भी व्यक्ति मुख्य द्वार से भीतर आता, उसकी नज़र अनायास उसी घड़ी पर चली जाती । हर बार वही समय - 10 बजकर 17 मिनट । जैसे घड़ी किसी एक क्षण को पकड़कर बैठ गई हो । एक सुबह परिचारक रामलाल बरामदे की सफाई कर रहे थे । उन्होंने झाड़ू रोककर घड़ी की और देखा और धीमे से कहा - "बड़ी अजीब बात है... मैंने इसे कभी रुका हुआ नहीं देखा ।" पास खड़े एक युवा कर्मचारी ने मुस्कुराकर कहा - "रामलाल काका, नई घड़ी लग जाएगी । इतनी पुरानी चीज़ों का क्या भरोसा ?" रामलाल ने उत्तर नहीं दिया । उन्होंने बस एक लंबी साँस ली । कार्यालय के सबसे वरिष्ठ कर्मचारी मिश्रा जी उस दिन अपनी पुरानी डायरी में कुछ लिख रहे थे । उनकी सेवानिवृत्ति में केवल तीन महीने बाक़ी थे । उन्होंने बातचीत सुनी और धीरे से बोले - "जानते हो... जब यह घड़ी पहली बार लगी थी, उस दिन पूरे शहर के लोग इसे देखने आए थे ।" सबने उत्सुकता से उनकी ओर देखा - "तब इस भवन का उद्घाटन हुआ था । घड़ी ने पहली बार दस बजकर सत्रह मिनट पर चलना शुरू किया था । तभी से हर दिन यह सबसे पहले कार्यालय का समय बताती थी।" एक युवा अधिकारी हँस पड़ा - "सर, एक घड़ी से भी कोई इतिहास जुड़ता है क्या?" मिश्रा जी मुस्कुराए - "इतिहास हमेशा बड़े लोगों और बड़ी चीजों से ही नहीं बनता सर ... कभी-कभी साधारण चीजें भी समय की गवाह बन जाती हैं ।"

अगले दिन नगर के एक पुराने घडीसाज़ को बुलाया गया । उसने सावधानी से घड़ी उतारी । उसके छोटे-छोटे पुर्जे मेज़ पर रखे । काफी देर तक वह बिना कुछ बोले उन्हें देखता रहा । फिर उसने कहा - "घड़ी खराब नहीं है ।" सब हैरान रह गए - "तो फिर चल क्यों नहीं रही ?" घड़ीसाज़ ने घड़ी का खाली हिस्सा दिखाते हुए कहा - "इसका पेंडुलम वर्षों पहले निकाल दिया गया था । किसी ने अस्थायी जुगाड़ से इसे चलाया हुआ था । अब वह व्यवस्था भी जवाब दे गई ।" कुछ पल रुककर उसने एक और बात कही - "बाहर से यह पूरी दिखाई देती है ... लेकिन भीतर जो इसे संतुलन देता था, वही नहीं है ।" वह चला गया, पर उसके शब्द वहीं रह गए ।

उस शाम कार्यालय जल्दी शांत हो गया । मिश्रा जी खिड़की के पास खड़े थे । बाहर हवा में पीपल के पते हिल रहे थे । उन्होंने धीमे स्वर में कहा - "हम सब भी कहीं इस घड़ी जैसे तो नहीं हो गए ?" किसी ने कुछ नहीं कहा । वे आगे बोले - "इमारत वहीं है .... नियम वही है... फाइलें भी वही हैं .... लेकिन क्या हमारे भीतर वह धड़कन बची है जो सेवा को केवल नौकरी नहीं, जिम्मेदारी मानती थी ?" उनकी आवाज़ में शिकायत नहीं थी, बस एक प्रश्न था, और शायद हर व्यक्ति उस प्रश्न का उत्तर अपने भीतर खोज रहा था ।

अगला दिन रविवार था, कार्यालय बंद था । फिर भी कुछ कर्मचारी स्वेच्छा से आए । रामलाल अपने साथ बाल्टी और कपड़ा लाए । एक कर्मचारी सीढ़ी लेकर आया । किसी ने घड़ी का शीशा साफ किया । किसी ने उसके पीतल के किनारों को चमकाया । घडीसाज़ नया पैंडुलम लेकर पहुँचा । जब उसने अंतिम पेंच कसा, तो सबकी निगाहें घड़ी पर टिक गई । कुछ क्षण तक सन्नाटा रहा । फिर... टक... एक सेकंड आगे, टक टक ... दूसरा सेकंड, टक टक टक ... तीसरा । ऐसा लगा जैसे वर्षों से रुकी हुई कोई धड़कन फिर से जीवित हो गई हो ।

सोमवार की सुबह कार्यालय खुला । आने वाले लोगों ने पहली बार देखा कि घड़ी फिर चल रही है । किसी ने कुछ नहीं कहा । लेकिन बदलाव दिखाई देने लगा । कर्मचारी समय से पहले आने लगे । लंबित फाइलों की सूची छोटी होने लगी । प्रतीक्षा कक्ष में बैठनेवालों से मुस्कुराकर बात की जाने लगी । शिकायत रजिस्टर के पन्ने पहले जितनी तेजी से नहीं भरते थे । मिश्रा जी यह सब चुपचाप देखते रहे । उन्हें लगता था कि घड़ी नहीं चली ... लोगों के भीतर कुछ फिर से जाग गया है । सेवानिवृति के दिन विदाई समारोह हुआ । भाषण हुए, फूल दिए गए, स्मृति चिह्न भेंट किया गया। जब मिश्रा जी बोलने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने मंच से कोई लंबा भाषण नहीं दिया । वे धीरे-धीरे मुख्य द्वार तक गए । सब उनके पीछे चल पड़े । उन्होंने उस पुरानी पड़ी की ओर देखा। उसकी सुइयाँ नियमित गति से घूम रही थी । उन्होंने कहा - “इस घड़ी ने मुझे एक बात सिखाई है ।" सभी शांत थे । मिश्रा जी ने कहा - "घड़ियाँ समय नहीं बनाती ... वे केवल समय दिखाती हैं । समय तो हमारे निर्णय बनाते हैं, हमारा व्यवहार बनाता है, हमारी ईमानदारी बनाती है । जिस दिन हमारे भीतर का कर्तव्यबोध रुक जाता है, उसी दिन सबसे महँगी घड़ी भी बेकार हो जाती है ।" उन्होंने कुछ क्षण रुककर घड़ी की टिक-टिक सुनी । फिर मुस्कुराकर बोले - "और जिस दिन मनुष्य अपने भीतर के पेंडुलम को अर्थात् अपने मूल्यों को फिर से खोज लेता है, उसी दिन समय दोबारा चल पड़ता है ।"

उस दिन किसी ने तालियाँ नहीं बजाई । शायद इसलिए कि हर व्यक्ति उस टिक-टिक में अपनी ही आवाज सुन रहा था । कार्यालय के बाहर खड़ा एक छोटा बच्चा अपने पिता से पूछ रहा था - "पापा, लोग इस पुरानी घड़ी को इतने ध्यान से क्यों देख रहे हैं ?" पिता ने बेटे का हाथ थामा और मुस्कुराकर कहा - "बेटा, क्योंकि यह घड़ी हमें समय नहीं, समय का सम्मान करना सिखाती है ।"

जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं । वह मनुज नहीं है पत्थर है जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।।

- गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'

"जब दफ्तर में हर काम हिंदी में करना अनिवार्य हो जाए..."



श्री सचिन पन्नू
लेखापरीक्षक

सबसे पहले तो एक बात साफ़ कर दूँ – मुझे हिंदी से कोई शिकायत नहीं है। शिकायत अगर किसी से है, तो उस घड़ी से है जो यह नहीं समझती कि एक पंक्ति अँग्रेज़ी में लिखने में 30 सेकंड लगते हैं और उसी बात को शुद्ध हिंदी में लिखने में कभी - कभी आधा घंटा भी कम पड़ जाता है ।

सुबह ऑफिस पहुँचते ही पहले कंप्यूटर ऑन होता है, फिर दिमाग । लेकिन जब याद आता है कि आज हर पत्र, हर ई-मेल और हर टिप्पणी हिंदी में लिखनी है, तो दिमाग भी कंप्यूटर की तरह थोड़ा-सा "लोडिंग..." पर चला जाता है ।

पहले "Please find attached" लिखकर काम आगे बढ़ जाता था । अब उसकी जगह ऐसा वाक्य बनाना पड़ता है कि खुद उसे दो बार पढ़ना पड़ता है कि आखिर लिखा क्या है ! कई बार तो लगता है कि पत्र कम और हिंदी निबंध ज़्यादा लिख रहे हैं । सबसे मज़ेदार स्थिति तब होती है जब कोई तकनीकी शब्द सामने आ जाता है। "Server", "Password", "VPN", "Login", "Scanner"... इन्हें देखकर मन कहता है, "भाई, तुम जैसे हो वैसे ही ठीक हो, ज़्यादा संस्कारी बनने की ज़रूरत नहीं है ।" फिर शुरू होती है शब्दों की खोज । पहले गूगल, फिर राजभाषा शब्दावली, फिर किसी वरिष्ठ सहयोगी की ओर उम्मीद भरी नज़र, और अंत में हिंदी अनुभाग । कई बार तो लगता है कि एक शब्द खोजने में जितनी मेहनत लगी, उतनी मेहनत से पूरा पत्र अँग्रेज़ी में तैयार हो जाता । लेकिन इसका एक सकारात्मक पहलू भी होता है । हिंदी में शब्दों को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अनायास ही हमारे मन में राजभाषाकर्मियों के प्रति श्रद्धाभाव जाग जाता है । हम यह सोचते हैं कि ये लोग किस मिट्टी के बने हैं जो अपना सारा काम हिंदी में कर लेते हैं ! हमारे दफ्तर में एक नया खेल भी शुरू हो गया है । कोई किसी से पूछता है, "इसका हिंदी शब्द पता है?" सामने वाला तुरंत जवाब देता है, "नहीं... लेकिन जय राम जी को ज़रूर पता होगा ।" और बेचारे जय राम जी पूरे विभाग के चलते-फिरते शब्दकोश बन जाते हैं । शब्दकोश क्या, जय राम जी चलती-फिरती हिंदी ही हैं । हिंदी ही उनका जीवन है, हिंदी ही उनके लिए सब कुछ है ।

बैठकों का हाल भी कम दिलचस्प नहीं होता । जैसे ही कोई अधिकारी कहते हैं, "राजभाषा का प्रयोग बढ़ाइए", सभी बड़े आत्मविश्वास से सिर हिलाते हैं । लेकिन बैठक ख़त्म होते ही पहला सवाल यही होता है – "यार, 'Follow-up' को हिंदी में क्या लिखें ?"

कई बार तो ई-मेल भेजने से पहले उसका हिंदी संस्करण पढ़कर खुद ही लगता है कि अगर इसे पढ़कर सामने वाले ने फोन कर दिया और पूछा, "भाई, कहना क्या चाहते हो ?", तो सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा। एक नए और उत्साही अधिकारी ने आदेश निकाला कि कार्यालय की हर फाइल पर अब केवल शुद्ध हिंदी में ही 'टिप्पणी' (Note) लिखी जाएगी । एक सीधे-सादे बाबूजी, जो जीवन भर "As discussed" और "Put up" लिखकर काम चलाते थे, संकट में आ गए । उन्होंने एक फाइल पर बहुत ही सुंदर और भारी-भरकम हिंदी शब्दों का प्रयोग करते हुए लिखा – "**प्रस्तुत पत्रावली के संदर्भ में सूचनार्थ निवेदन है कि प्रार्थी द्वारा किए गए अनुरोध पर विचारोपरांत, नियमानुसार संस्तुति प्रदान की जा सकती है ।**" जब यह फाइल अधिकारी के पास पहुँची, तो उन्होंने लाल पेन से लिखा – "भाषा अत्यंत क्लिष्ट है । इसे आम बोलचाल की सरल हिंदी में प्रेषित करें ।" बाबूजी ने

माथा पीट लिया। उन्होंने घर जाकर अपने पोते से अँग्रेजी में मतलब समझा और अगले दिन फिर से वही पुराना "Put up for orders" लिख कर फाइल आगे बढ़ा दी । अभी मेरे कार्यालय में कुछ अधिकारियों की एक टीम बनाकर किसी विशिष्ट विषय पर Pilot Study करने की जिम्मेदारी दी गई । चूँकि अब पेशेगत काम को हिंदी में करना ही करना है तो, माथापच्ची शुरु हो गई कि इस Pilot Study नामक बला को हिंदी में क्या कहा जाए । किसी ने इसे चालक अध्ययन कह दिया, तो किसी ने संक्षिप्त अध्ययन तो किसी ने मूल अध्ययन कहा । अँग्रेज़ी में एक कहावत है कि When six economists converge on the same topic, at least seven conclusions come out necessarily. हारकर इस Pilot Study नामक बला को पायलट स्टडी कहकर ही संतोष कर लिया गया । इसी तरह एक दिन कार्यालय में एक उच्च स्तरीय निरीक्षण दल आया । निदेशक साहब ने अपने निजी सचिव को आदेश दिया, "जाओ, मेहमानों के लिए कुछ जलपान की व्यवस्था करो और हिंदी में ही शिष्टाचार निभाना ।" निजी सचिव महोदय बैठक कक्ष में पहुँचे और अतिथियों से पूरी गंभीरता से बोले – "आप महानुभावों के सम्मुख उष्ण पेय (गरम चाय) और कुछ शुष्क खाद्य पदार्थ (बिस्कुट) प्रस्तुत किए जा रहे हैं । कृपया इसका रसास्वादन करें ।" अतिथि हैरान रह गए कि चाय माँगने पर इतनी भारी शब्दावली क्यों सुननी पड़ रही है ! एक अतिथि ने मुस्कुराते हुए कहा, "भाई साहब, चाय में चीनी कम और हिंदी जरा हल्की रखिएगा, ताकि आसानी से गले उतर सके !"

लेकिन इन सबके बीच एक अच्छी बात भी है। पहले जिन हिंदी शब्दों को देखकर लगता था कि ये किसी प्रतियोगी परीक्षा के लिए बने हैं, अब धीरे-धीरे वे अपने लगने लगे हैं। शब्द भले कठिन हों, लेकिन रोज़-रोज़ मिलते-जुलते उनसे भी दोस्ती हो ही जाती है । प्रत्येक प्रबुद्ध भारतीय यह मानता है कि हिंदी का प्रयोग बढ़ना चाहिए, क्योंकि यह हमारी राजभाषा ही नहीं, हमारी पहचान भी है । बस एक छोटी-सी विनती है – हिंदी ऐसी हो जिसे पढ़कर अर्थ समझने के लिए अलग से बैठक न बुलानी पड़े । अगर भाषा सरल होगी तो काम भी तेज़ होगा और मुस्कान भी बनी रहेगी ।

और हाँ, अगर किसी दिन आपको कोई अधिकारी बहुत देर तक कंप्यूटर स्क्रीन की ओर देखता हुआ दिखाई दे, तो यह मत समझिए कि वह काम नहीं कर रहा है । हो सकता है, वह सिर्फ़ "Kindly do the needful" का सरल और सुंदर हिंदी रूप खोज रहा हो !



राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है - महात्मा गाँधी

रथयात्रा : इतिहास एवं महत्व



श्री सौरभ नायक
लेखापरीक्षक

सनातनी संस्कृति भारतवर्ष की सांस्कृतिक पहचान है । देश के प्रत्येक भाग की अपनी सांस्कृतिक विशेषता है । यह ऐसी प्रकृति सभ्यता है जहाँ प्रकृति और धर्म एकाकार हो जाते हैं अर्थात् जो धर्म है वही प्रकृति है और जो प्रकृति है वही धर्म है । चाहे केरल का ओणम हो, तमिलनाडु का पोंगल अथवा असम का बिहू ... सांस्कृतिक विविधता इस देश की विशेषता है । इसी क्रम में ओडिशा में प्रतिवर्ष मनाया जानेवाला भगवान जगन्नाथ की विश्व-प्रसिद्ध रथयात्रा है । आइए, इस रथयात्रा के इतिहास और महत्व के बारे में कुछ विशेष जानते हैं ।

ओडिशा के पुरी में हर साल आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को निकलने वाली जगन्नाथ रथ यात्रा एक भव्य धार्मिक उत्सव है । इसमें भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और देवी सुभद्रा भव्य रथों पर सवार होकर अपनी मौसी के घर (गुंडिचा मंदिर) जाते हैं । यह यात्रा भाई-बहनों के प्रेम और 'सभी को ईश्वर की दर्शन प्राप्ति' का प्रतीक है ।



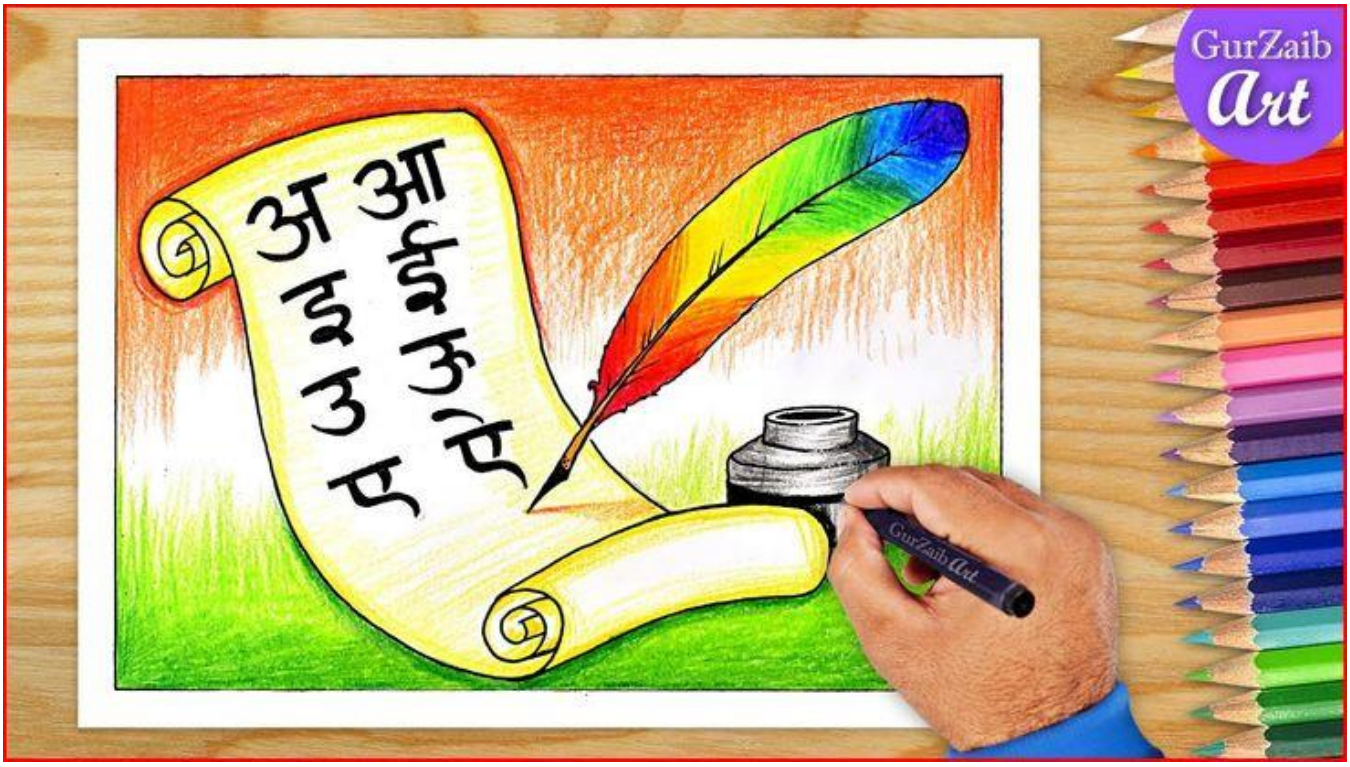
जगन्नाथ यात्रा का इतिहास स्कंद, ब्रह्म और पद्म पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों में वर्णित है । यह यात्रा द्वापर युग में भगवान कृष्ण द्वारा ब्रजवासियों को दर्शन देने के लिए की गई यात्रा की स्मृति में मनाई जाती है । पुरी के मंदिर में सदियों से यह अनूठी परंपरा चली आ रही है, जहाँ हर साल नीम की विशेष लकड़ी से तीनों देवी-देवताओं के लिए नए रथ बनाए जाते हैं । इन रथों में किसी भी धातु की कील या नट-बोल्ट का इस्तेमाल नहीं होता ।

आदिकाल की बात है । कलिंग (उस समय ओडिशा को कलिंग कहा जाता था) पर राजा इंद्रद्युम्न का शासन था । चंद्रभागा नदी के तट पर नीलांचल सागर (बंगाल की खाड़ी क़ा ओडिशा तट) में काष्ठ की एक विशालकाय व भव्य लकड़ी तैरती हुई राजा इंद्रद्युम्न को मिली । उन्होंने उसे अपने साथ ले जाकर उसे भगवान विष्णु का मूर्त रूप देना चाहा । उसी समय देव शिल्पकार विश्वकर्माजी ने स्वयं मुनि रूप में प्रकट हो गए । भगवान विश्वकर्मा ने इसे चैतन्य महाप्रभु के वैष्णव धर्म के प्रेम-स्नेह के महान आदर्श के प्रतिरूप युगल छबि राधा-कृष्ण का उनकी बहन सुभद्रा व अग्रज बलराम सहित उन्हें जीवंतता प्रदान की जिसे हम सभी पूरे जगत के नाथ अर्थात भगवान जगन्नाथ के रूप में युगों से पूजते आ रहे हैं । यह अलौकिक रथ यात्रा प्रत्येक वर्ष आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि से 10 दिनों के लिए जगन्नाथपुरी में नगर भ्रमण के भव्य आयोजन और भगवान श्रीकृष्णजी के मौसी गुंडीचा माता मंदिर से आरंभ होती है जिसमें भगवान जगन्नाथ (पूर्ण परात्पर भगवान) अपने ज्येष्ठ भ्राता बलराम और अपनी लाडली बहन सुभद्रा को पूरे जगन्नाथपुरी नगर का भव्य दर्शन कराते हैं । उसी अलौकिक प्रेम व स्नेहसिक्त भक्ति की स्मृति में प्रत्येक वर्ष पूरे भारतवर्ष ही नहीं अपितु पूरे संसार में भगवान जगन्नाथ के रथयात्रा का पवित्र आयोजन किया जाता है । मुख्य रथयात्रा ओडिशा के जगन्नाथपुरी में होती है जिसमें पुरी के राजा सहित सभी गण्यमान व्यक्ति इस परम सुसज्जित रथ को पूर्ण उत्साह, आह्लाद, भावविह्वलता, आत्मवैभोर्य व भक्तिरस में सराबोर होकर श्रद्धा व हर्षोल्लास से खींचते हैं । सोने के झाड़ू से मंदिर परिसर की सफाई करते हैं तथा श्रीजगन्नाथजी / नीलमाधव जगन्नाथपुरी के नागरिकों की व्यथा स्वयं चलकर उनके द्वारों पर जाकर सुनते हैं । इस क्रम में वे जन-साधारण पर स्नेहालेप व आशीर्वाद की भारी अमृतवर्षा करते हैं व सभी भक्त विलक्षण दिव्य महाप्रसाद का भोग पाते हैं। कहते हैं कि प्रत्येक 12, 16 या 18 वर्ष के पश्चात नीम की लकड़ी से बने इस त्रिमूर्ति की पुन: प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है । इस कार्यक्रम में पूरे जगन्नाथपुरी तीर्थ धाम (श्रीक्षेत्र,

शंख क्षेत्र, पुरुषोतमपुरी) की लाईट बंद कर नीम के लकड़ी से बने नए काष्ठ निर्मित मूर्ति में पुन:प्राण-प्रतिष्ठा करने के लिए ब्रह्मतत्व / ब्रह्मपदार्थ की बदली की जाती है जिसे वहां के देवस्वरूप पुजारियों द्वारा आंखों में पट्टी बांधकर व हाथ में दस्ताने लगाकर पूर्ण अंधकारमय व अति-सुरक्षित वातावरण में पूर्ण की जाती है ।

ऐसी मान्यता है कि रथयात्रा के दौरान जो भी भक्त इन विशाल रथों की रस्सियों को खींचता है, उसके सभी पाप धुल जाते हैं और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है । यह साल का एकमात्र समय होता है, जब सभी धर्मों और जातियों के लोग भगवान के दर्शन कर सकते हैं, जो अन्यथा मंदिर के गर्भगृह में सीमित होते हैं । भगवान अपने जन्मस्थान माने जाने वाले गुंडिचा मंदिर में 9 दिनों तक विश्राम करते हैं और फिर अपने मुख्य स्थान पर लौट आते हैं जिसे 'बाहुड़ा यात्रा' कहते हैं ।

रथ को खींचना अहंकार के त्याग और समाज में समरसता का संदेश देता है । यह सभी को एक मंच पर लाता है, जहाँ जाति या पंथ का कोई भेदभाव नहीं होता । यह आयोजन भारतीय पर्यटन को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देता है और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का दुनिया को परिचय कराता है ।



भारत की एकता और एकजुटता को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम हिंदी है - इंदिरा गाँधी

सत्साहित्य वही जो जन-जन की जुबान पर चढ़ जाए
नेम-क्षेम का अनुयायी हो सच्चा वही सृजेता है - जय राम सिंह

मोबाइल की दुनिया में खोते रिश्ते

"दूरियों को कम करने के लिए बना मोबाइल, आज अपनों के बीच ही दूरियाँ बढ़ाने लगा है ।"



सुश्री शिवानी वर्मा
आशुलिपिक ग्रेड-II

तकनीक ने मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ प्रदान की हैं । आज मोबाइल फोन केवल संवाद का माध्यम ही नहीं, बल्कि शिक्षा, बैंकिंग, मनोरंजन, कार्यालयीन कार्य और सूचना का प्रमुख साधन बन चुका है । एक छोटी स्क्रीन ने पूरी दुनिया को हमारी हथेली में समेट दिया है । किंतु इस सुविधा के साथ-साथ एक ऐसी चुनौती सामने आई है, जिस पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है ।

मोबाइल की बढ़ती निर्भरता और उससे कमज़ोर होते रिश्ते

कुछ दिन पहले मैं रेल यात्रा कर रही थी । मेरे सामने एक परिवार बैठा था । पहले तो सब कुछ सामान्य लगा, लेकिन कुछ ही देर में महसूस हुआ कि पूरे सफ़र में कोई किसी से बात नहीं कर रहा था। पिता मोबाइल पर समाचार देख रहे थे, माँ सोशल मीडिया देख रही थीं और दोनों बच्चे वीडियो गेम खेल रहे थे । एक ही सीट पर चार लोग, लेकिन चारों अकेले अपनी-अपनी दुनिया में खोए-से । यह आधुनिक मानव-जीवन की तस्वीर है ।

दिल्ली जैसे महानगर में एक सज्जन सड़क पार कर रहे थे, लेकिन उनकी आँखें सड़क पर नहीं, बल्कि मोबाइल स्क्रीन पर चल रही रील्स पर टिकी थी । वे ईयरफोन लगाए 'पतली कमरिया मोरी' गाने पर मस्त हुए जा रहे थे । अचानक सामने से आती तेज रफ्तार गाड़ी ने इमर्जेंसी ब्रेक मारा । ड्राइवर खिड़की से सिर निकालकर चिल्लाया - "भाई साहब ! ऊपर जाकर रील बनानी है या यहीं लाइव आना है ?" ड्राइवर की आवाज़ सुनकर सज्जन चौंके, मोबाइल जेब में रखा और हीं, हीं करते हुए यों आगे बढ़ गए जैसे उन्होंने कोई बहादुरी का काम किया हो ।

हमारे मोबाइल में गज़ब की बला है जिसका नाम है ऑटो-करेक्ट (Auto-correct) । यह जितनी मदद नहीं करता उससे अधिक अनर्थ कर देता है । एक कर्मचारी ने अपने सख्त बॉस को मैसेज भेजा - "Sir, I am shifting to a new flat today, so I will be a bit late." लेकिन ऑटो-करेक्ट ने 'shifting' को 'shiting' कर दिया। मैसेज गया: "Sir, I am shiting to a new flat today..."बॉस का तुरंत जवाब आया: "Wherever you want to shit, do it fast and come to the office !" (जहाँ भी करना है जल्दी करो और ऑफिस आओ !)

मोबाइल और संवेदनशून्यता

एक मोहल्ले में किसी बुजुर्ग का निधन हो गया । लोग शोक व्यक्त करने पहुँचे । सब लोग शोक-संतप्त परिवार को सांत्वना दे रहे थे । लेकिन तभी मृतक के पुत्र का फोन बज उठा - “आज मैं ऊपर, आसमाँ नीचे, आज मैं आगे, ज़माना है पीछे” । रिंगटोन को सुनकर आए हुए लोगों ने माथा पीट लिया - “हाय रे दुनिया”! हुआ यों कि दो दिन पहले जब बुज़ुर्ग पूरी तरह स्वस्थ थे, घर में हँसी-खुशी का वातावरण था, तभी

मृतक के पोते ने अपने पापा का रिंगटोन बदलकर इस गीत को लगा दिया था । अगले दिन बुज़ुर्ग गंभीर रूप से बीमार हो गए । उनकी तीमारदारी के क्रम में रिंगटोन बदलने की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया । इस तरह उस रिंगटोन ने वेदना की बेला में भी अनर्थ कर दिया । बुज़ुर्ग की लाश जब श्मशानभूमि पहुँची तो वहाँ सारे रिश्तेदार, शुभचिंतक आदि आए । तीन-चार युवा इस बात में व्यस्त थे कि बुजुर्ग की तस्वीर के साथ कौन सा 'सैड म्यूजिक' लगाकर इंस्टाग्राम स्टोरी और व्हॉट्सऐप स्टेटस डाला जाए । एक ने तो मृत व्यक्ति के शव के साथ सेल्फी लेने की कोशिश की और कैप्शन लिखा – "फीलिंग सैड विद दादाजी, रेस्ट इन पीस।" इसे डिजिटल संवेदनशून्यता कह सकते हैं ।

मोबाइल आज हमारी ज़रूरत बन चुका है। सुबह से लेकर रात की आखिरी शुभ रात्रि तक, दिन का शायद ही कोई ऐसा हिस्सा हो जब मोबाइल हमारे साथ न हो । यह हमारी सुविधा, जानकारी और कामकाज का एक महत्वपूर्ण माध्यम है । सरकारी कार्यालयों से लेकर निजी जीवन तक, इसके बिना बहुत से कार्यों की कल्पना भी कठिन है । लेकिन समस्या तब शुरू होती है जब सुविधा आदत बनकर रिश्तों पर भारी पड़ने लगती है ।

पहले बिजली जाने पर परिवार एक साथ बैठकर बातें करता था, अब इंटरनेट बंद होने पर बेचैनी बढ़ जाती है । हम सैकड़ों लोगों से जुड़े हैं, और अपने ही घर के लोगों से दूर होते जा रहे हैं । ऑनलाइन दुनिया में सक्रिय रहते हुए भी हम अपनों के लिए 'ऑफलाइन' होते जा रहें हैं । इंटरनेट पर एक वीडियो-क्लिप वायरल हुआ है जिसमें एक बच्चे के हाथ से मोबाइल लेते ही वह पागलों जैसी हरकतें करने लगता है, और मोबाइल हाथ में आते ही वह नॉर्मल हो जाता है । ज़रा सोचिए, जब वह बच्चा बड़ा होगा तब क्या होगा ? सबसे अधिक चिंता तब होती है जब बच्चे या बुजुर्ग संवाद के लिए समय चाहते हैं, और जवाब मिलता है - "बस दो मिनट" । ये दो मिनट अक्सर रिश्तों को दूरी बढ़ा देते हैं । रिश्ते केवल साथ रहने से नहीं, बल्कि एक-दूसरें को समय देने से बनते हैं। कभी-कभी पाँच मिनट की सच्ची बातचीत घंटों की ऑनलाइन मौजूदगी से कहीं ज्यादा कीमती होती है।

यह कहना सही नहीं कि मोबाइल ही समस्या है। उसने हमें जोड़ा भी है और सहारा भी दिया है । असली मुद्दा उसका असंतुलित उपयोग है। जब स्क्रीन का समय रिश्तों के समय से अधिक हो जाए, तो रुककर सोचने की जरूरत है। हमें बड़े बदलाव की नहीं, बस छोटे संतुलन की जरूरत है - भोजन के समय मोबाइल को दूर रखना, परिवार के लिए कुछ समय तय करना और बातचीत को प्राथमिकता देना । तकनीक से दूर होना समाधान नहीं है, लेकिन उसे जीवन पर हावी भी नहीं होने देना चाहिए। मोबाइल जीवन का साधन है, उद्देश्य नहीं ।

तकनीक आगे बढ़ती रहेगी और हमें उसके साथ चलना भी होगा। लेकिन यह भी याद रखना होगा कि मनुष्य की सबसे बड़ी जरूरत तेज इंटरनेट की नहीं, बल्कि सच्चे रिश्ते हैं । मोबाइल हमें दुनिया से जोड़ सकता है, लेकिन अपनेपन का एहसास आज भी केवल एक मुस्कान, एक बातचीत और साथ बिताए गए कुछ पलों से ही मिलता है । हम तकनीक का उपयोग करें, लेकिन रिश्तों की कीमत पर नहीं । क्योंकि खोया हुआ मोबाइल तो वापस मिल सकता है, लेकिन खोए हुए रिश्तों को लौटाने में अक्सर बहुत देर हो जाती है ।

हर शब्द है फूल इसका भर लो हृदय गागरी । मिलजुल बोलो सब जय हिंदी जय देवनागरी ।।

हम खुश नहीं हैं, क्यों ?



रितू मोटवानी
व.ले.प.अ.

जो चीज़ें हमारे पास पहले से हैं, धीरे-धीरे हमारी नज़र में उनकी अहमियत कम हो जाती है । एसी चल रहा है – कोई खुशी महसूस नहीं होती; लेकिन जैसे ही यह बंद होता है, हमें बेचैनी होने लगती है । हमारे पास मोबाइल फ़ोन है – कोई खुशी नहीं; लेकिन अगर नेटवर्क चला जाए, तो लगता है जैसे दुनिया ही खत्म हो गई हो । हमारा अपना घर है – कोई संतोष नहीं; बल्कि हम इस बात से दुखी रहते हैं कि पड़ोसी का घर हमसे बड़ा है । हमारे पास कार है – कोई संतुष्टि नहीं; बल्कि हमें इस बात की चिंता रहती है कि किसी और की कार हमसे बड़ी है। असल में, मनुष्य अपने ही स्वर्ग में होता है, लेकिन किसी और के स्वर्ग से तुलना करके दुखी हो जाता है।

लेकिन इसी धरती पर एक और दुनिया भी है ... आज भी, लाखों लोग सिर्फ़ एक घड़ा पानी पाने के लिए घंटों तक कतारों में खड़े रहते हैं । लाखों परिवारों के पास रहने के लिए ठीक-ठाक घर तक नहीं है । दिन में दो बार का खाना मिलने की भी कोई गारंटी नहीं होती । बच्चों के सपने स्कूल की दहलीज तक पहुँचने से पहले ही टूट जाते हैं । उनके पास तन ढकने के लिए पर्याप्त कपड़े तक नहीं होते ।

जिन सुविधाओं को हम "आम" समझते हैं, वे दूसरों के लिए जीवन भर के सबसे बड़े सपने होते हैं । जब हमें एसी का रिमोट नहीं मिलता, तो हमें गुस्सा आता है । उन्हें धूप से बचने के लिए पेड़ की छाया भी नहीं मिलती। हम डाइट चार्ट ढूँढते हैं । वे इस चिंता में सो जाते हैं कि उन्हें अगला भोजन कैसे मिलेगा ।

तभी अनुभूति होती है ... स्वर्ग और नरक वे जगहें नहीं हैं जहाँ मृत्यु के बाद जाया जाता है ... वे यहीं मौजूद हैं ... इसी धरती पर ... इसी शहर में ... इसी गली में ... कभी-कभी एक ही दीवार के दोनों ओर ...

किसी घर का लड़का इसलिए परेशान हो जाता है कि उसका नया मोबाइल फोन थोड़ा धीमा हो गया है । गली के दूसरी ओर वाले घर का लड़का इसलिए रोता है क्योंकि उसके पास ऑनलाइन पढ़ाई के लिए मोबाइल फोन ही नहीं है । एक आदमी इसलिए शिकायत करता है क्योंकि उसका गर्म पानी पाँच मिनट देर से आया । वहीं दूसरा आदमी भगवान का शुक्रिया अदा करता है कि उसे आज पानी मिल गया ।

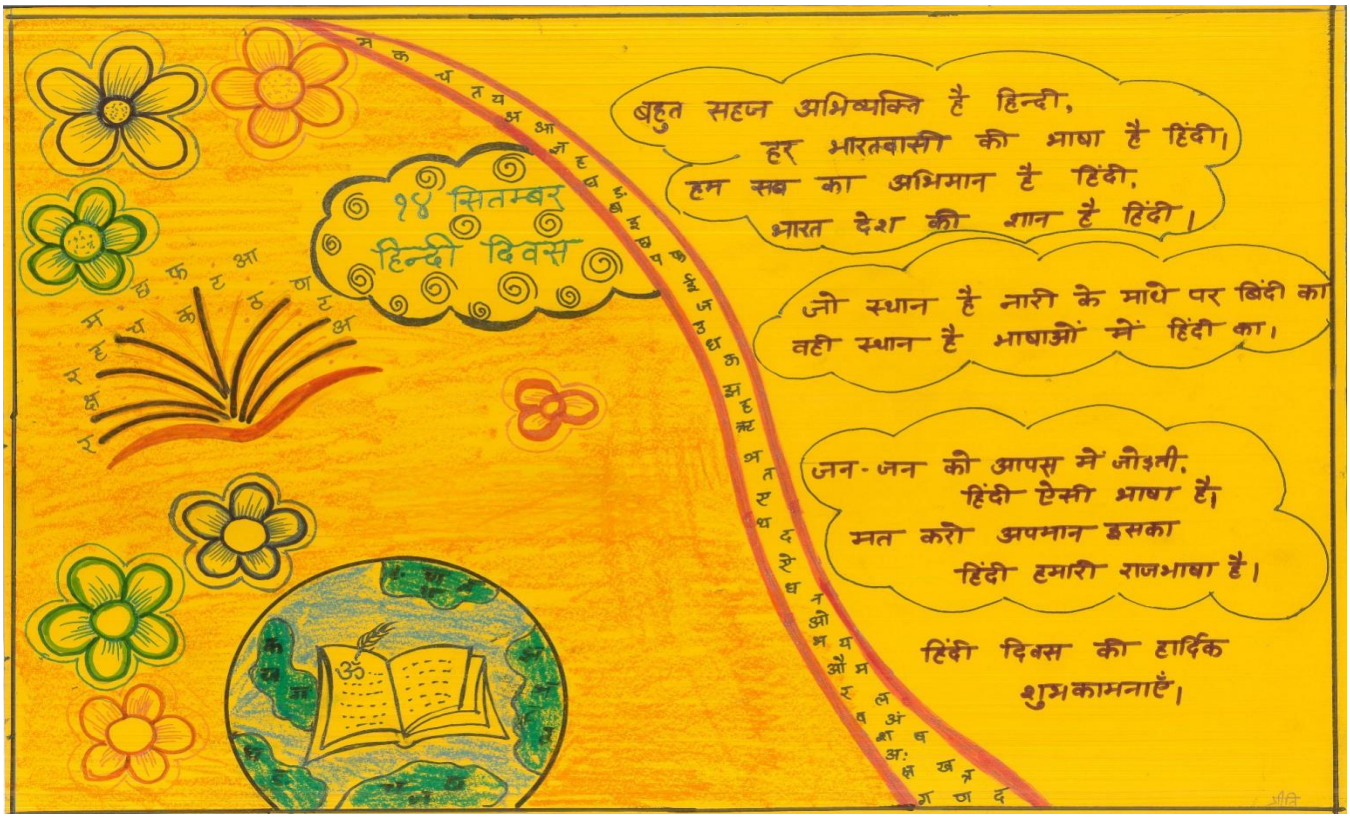
अंतर सिर्फ़ परिस्थिति का नहीं होता ... अंतर दृष्टिकोण का भी होता है । कुछ लोग कठिन परिस्थिति में भी मुस्कुराना सीख जाते हैं । वहीं कुछ लोग हर तरह की सुख-सुविधा होने के बावजूद शिकायत करते रहते हैं । मनुष्य की अजीब आदतों में से एक यह भी है – हम हमेशा इस बात का हिसाब रखते हैं कि हमारे पास क्या नहीं है ... लेकिन हमारे पास जो पहले से है, उस पर कभी ध्यान नहीं देते ।

हर रात सोने से पहले बस पाँच बातें लिखने की कोशिश करें – आज, मैं साँस ले रहा हूँ । आज, मेरे पास पीने के लिए पानी है । आज, मैंने खाना खाया । आज, मेरे पास रहने के लिए घर है । आज, मेरे अपने मेरे साथ हैं । इससे हमारी ज़िंदगी बदल सकती है ।

शायद "स्वर्ग" कोई जगह नहीं है ... यह एक अनुभव है ! इसी तरह, "नरक" भी कोई जगह नहीं है ... स्वर्ग के अनुभव को भूल जाना ही नरक है ! जो हमारे पास है, उसके लिए कृतज्ञ होना ही स्वर्ग है । जो हमें मिला है उसे भूल जाना और हमेशा शिकायत करते रहना ही नरक है ।

मृत्यु के बाद क्या होता है, यह कोई पक्के तौर पर नहीं जानता । लेकिन जब तक हम जीवित हैं, हमें यह सुन्दर धरती, साँस लेने के लिए हवा, पीने के लिए पानी, खाने के लिए खाना, अपने प्रियजन और एक बटन दबाते ही मिलने वाली अनगिनत सुविधाएँ मिली हुई हैं । अगर इतना सब कुछ होने के बावजूद हम हमेशा दुखी ही रहते हैं ..... तो इससे बड़ी भाग्यहीनता और क्या हो सकती है ?

शायद भगवान मुस्कुराते हुए कह रहे हों – "मैंने तुम्हें स्वर्ग में ही रखा है ... फिर भी तुमने वहाँ भी शिकायतों का दफ़्तर खोल लिया है !" इसलिए, आज से अपनी शिकायतें न गिनें ... अपनी "कृतज्ञता" को गिनें, क्योंकि सच्चा स्वर्ग तो कृतज्ञता से भरे दिल में ही बसता है ।



अँग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन ।
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।। **- भारतेन्दु हरिश्चंद्र**

"व्याकरण और भाषाशास्त्र से कहीं अधिक महान भाषा है **- जवाहरलाल नेहरू**

मृदु भावों से हो हृदय भरा, तो गीत कलम से फूटेगा
जिसका घर सूना-सूना हो, वह अक्षर पर ही टूटेगा
अधिकार न छीनो मानस का, वाणी के लिए कलपने दो
हिंदी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो **- गोपाल सिंह नेपाली**

क्रिकेट : मेरा साथी, मेरा शिक्षक



श्री परितोष कुमार मल्ल
लेखापरीक्षक

जब मुझसे पूछा जाता है कि क्रिकेट ने मेरे जीवन को किस तरह प्रभावित किया है, तो सच कहूँ, इसका उत्तर किसी एक घटना से नहीं दिया जा सकता । मुझे यह भी याद नहीं कि मैंने पहली बार बल्ला कब पकड़ा था या गेंद फेंकना किसने सिखाया था । इतना जरूर याद है कि बचपन से ही मैंने खुद को क्रिकेट के बीच पाया । शायद मेरे हाथों में सबसे पहले कोई खिलौना आया होगा तो वह गेंद ही रही होगी । घरवालों ने भी हमेशा यही कहा कि मुझे क्रिकेट से विशेष लगाव था ।

समय के साथ मुझे एहसास हुआ कि क्रिकेट मेरे लिए केवल एक खेल नहीं रहा, करीबी साथी बन गया है । जैसे बचपन का कोई मित्र, जिसके साथ हम हँसते हैं, रोते हैं, अपने जीवन का सबसे सुंदर समय बिताते हैं, ठीक वैसा ही रिश्ता मेरा क्रिकेट से रहा है । मैंने उसके साथ अपने बचपन को जिया, अपनी खुशियाँ बाँटी और अपनी हार का दर्द भी उसी के साथ महसूस किया ।

मेरे बचपन की एक बहुत प्यारी याद आज भी मेरे साथ चलती है । क्रिकेट एक टीम का खेल है, जहाँ ग्यारह खिलाड़ियों की ज़रूरत होती है । लेकिन मैंने बचपन में सीखा कि अगर आपके भीतर खेल के लिए सच्चा प्रेम हो, तो एक बल्ला, एक गेंद और एक दीवार ही पूरी दुनिया बन जाते हैं । मैं अकेला ही बल्लेबाज़ भी होता था, गेंदबाज़ भी और फील्डर भी । दीवार पर गेंद फेंकता, वही गेंद लौटकर आती, मैं उसे खेलता, फिर खुद ही दौड़कर गेंद उठाता और अगली गेंद डाल देता । उस समय न किसी साथी की कमी महसूस होती थी, न दर्शकों की। शायद यही किसी रुचि की सबसे बड़ी खूबसूरती है – वह आपको आत्मनिर्भर बना देती है । लोग बाहर से देखकर मुस्कुरा सकते हैं, हँस भी सकते हैं कि यह बच्चा अकेला क्या कर रहा है, लेकिन जो आनंद उस बच्चे के भीतर चल रहा होता है, उसे वही महसूस कर सकता है । आज जब किसी बच्चे को अकेले क्रिकेट खेलते देखता हूँ, तो उसके हाथों में बल्ला नहीं, अपना बचपन दिखाई देता है । मुझे विश्वास है कि वह बच्चा उस पल को जीवन भर नहीं भूलेगा, क्योंकि कुछ यादें खेली नहीं जातीं, जी ली जाती हैं । शायद यही क्रिकेट की सबसे बड़ी खूबसूरती है – वह केवल खेलना नहीं सिखाता, बल्कि अपने भीतर एक पूरी दुनिया बसाना भी सिखाता है ।

कई लोगों को शायद यह समझ न आए कि एक मैच हार जाने पर या एक विकेट लेने पर कोई इतना भावुक कैसे हो सकता है । लेकिन मेरे लिए हर रन, हर विकेट और हर हार-जीत केवल खेल का हिस्सा नहीं थी । वे मेरी भावनाओं का हिस्सा थीं । क्रिकेट ने मेरी संवेदनाओं को आकार दिया । उसने मुझे सिखाया कि संघर्ष क्या होता है, धैर्य क्या होता है और लक्ष्य तक पहुँचने के लिए लगातार प्रयास कैसे किया जाता है ।

आज लोग कहते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए मोटिवेशन (उत्साहवर्द्धन) चाहिए । जब भी मैं अपने जीवन की ओर देखता हूँ, तो महसूस करता हूँ कि मेरा सबसे बड़ा मोटिवेशन हमेशा क्रिकेट ही रहा है । कई ऐसे अवसर आए, जब मुझे लगा कि शायद मैं सही दिशा में नहीं जा रहा हूँ या मुझसे यह काम नहीं हो पाएगा । लेकिन तभी क्रिकेट ने मुझे अपनी सबसे बड़ी सीख याद दिलाई – "रिज़ल्ट (परिणाम) से पहले प्रोसेस (तैयारी) पर भरोसा करना सीखो ।

क्रिकेट ने मुझे सिखाया कि एक अच्छी पारी एक-एक रन जोड़कर बनती है, कोई भी गेंद फेंकने से पहले धैर्य और अभ्यास चाहिए, और हर हार के बाद अगली गेंद फिर उतने ही आत्मविश्वास से डालनी होती है । यही सोच धीरे-धीरे मेरे जीवन का हिस्सा बन गई । मैंने समझा कि सफलता मंज़िल में कम और उस तक पहुँचने की यात्रा में अधिक छिपी होती है ।

एक समय ऐसा भी आया जब मुझे अपने भविष्य का निर्णय लेना था । मेरे सामने दो रास्ते थे – क्रिकेट और पढ़ाई । मेरे माता-पिता ने मुझे क्रिकेट में करियर बनाने से रोका । उस समय शायद मुझे थोड़ा दुख हुआ था, लेकिन आज मैं उनकी सोच को समझता हूँ । जिस छोटे से शहर से मैं आता हूँ, वहाँ न अच्छी क्रिकेट अकादमी थी, न मार्गदर्शन और न ही ऐसे अवसर, जिनके सहारे कोई बड़ा सपना पूरा किया जा सके । उन्होंने मेरी परिस्थितियों को देखकर निर्णय लिया और उन्हें विश्वास था कि यदि मैं अपनी ऊर्जा का थोड़ा-सा हिस्सा भी शिक्षा में लगाऊँगा, तो एक सम्मानजनक जीवन बना सकूँगा ।

मैंने उनके निर्णय का सम्मान किया । शिक्षा के क्षेत्र में भी मैंने मेहनत की । मैं यह दावा नहीं करूँगा कि मैंने बहुत बड़ी उपलब्धियाँ हासिल कीं, लेकिन इतना अवश्य कहूँगा कि आज मैं जिस स्थान पर खड़ा हूँ, वहाँ तक पहुँचने में क्रिकेट की सीख का बहुत बड़ा योगदान है । यदि क्रिकेट ने मुझे संघर्ष करना, हार न मानना और निरंतर प्रयास करना न सिखाया होता, तो शायद मैं जीवन की चुनौतियों का सामना भी इतनी मजबूती से नहीं कर पाता।

आज मेरी उम्र तीस वर्ष है । पिछले चार-पाँच वर्षों से क्रिकेट मेरे जीवन का नियमित हिस्सा नहीं रहा । वह बल्ला, जो कभी मेरे हाथों से अलग नहीं होता था, अब अक्सर किसी कोने में रखा रहता है । जीवन की जिम्मेदारियाँ बढ़ गईं । रोज़गार, परिवार और भविष्य की चिंताओं ने मुझे अपने उस पुराने साथी से कुछ दूर कर दिया । लेकिन दूरी केवल समय की है, रिश्ते की नहीं ।

आज भी जब जीवन कठिन लगता है, जब तनाव बढ़ता है या आत्मविश्वास डगमगाने लगता है, तब मुझे लगता है कि मेरा वही पुराना साथी अब भी मेरे भीतर मौजूद है । वह बिना शब्दों के मुझे याद दिलाता है कि हार मानना मेरे स्वभाव में नहीं है । वह कहता है – अपने संघर्षों से भागो मत, अपने मूल को पहचानो, अपनी क्षमता पर विश्वास रखो और हर परिस्थिति का सामना उसी साहस से करो, जैसे मैदान पर किया करते थे ।

मेरे लिए क्रिकेट कभी केवल ग्यारह खिलाड़ियों का खेल नहीं था । वह मेरे व्यक्तित्व का निर्माता, मेरे विचारों का शिक्षक और मेरे जीवन का सबसे सच्चा साथी रहा है । उसने मुझे जीत की खुशी दी, हार को पचाने का साहस दिया, अनुशासन दिया, धैर्य दिया और सबसे बढ़कर यह विश्वास दिया कि मनुष्य अपनी पहचान अपने संघर्षों से बनाता है, केवल अपनी सफलताओं से नहीं ।

मैं आज जहाँ भी हूँ, उसमें मेरे माता-पिता की सीख और मेरी शिक्षा का योगदान अवश्य है, लेकिन उस नींव को मजबूत करने वाला यदि कोई है, तो वह मेरा क्रिकेट है । शायद अब मैं मैदान पर पहले की तरह नहीं उतरता, लेकिन क्रिकेट आज भी मेरे भीतर जीवित है । वह मेरी यादों में नहीं, मेरे व्यक्तित्व में बसता है । और इसी कारण मैं जीवन भर अपने इस सबसे प्रिय साथी–अपने क्रिकेट–का आभारी रहूँगा ।

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न ह्यैहैं सोय ।
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय ।। **- भारतेन्दु हरिश्चंद्र**

सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में हिंदी महानतम स्थान रखती है ।

- डॉ. अमरनाथ झा

एक कप चाय की कीमत

"रिश्ते हमेशा बड़े आयोजनों से नहीं बनते, कई बार एक साथ पी गई चाय की एक प्याली जीवन भर की आत्मीयता दे जाती है।"



श्री सुधांशु रावत
लेखापरीक्षक

ऑफिस की चौथी मंज़िल पर स्थित "सहयोग कॉर्पोरेशन" में हर दिन सुबह नौ बजे से काम शुरू हो जाता था । कम्प्यूटरों की हल्की-सी आवाज़, की-बोर्ड पर तेजी से चलती उँगलियाँ, फोन की घंटियाँ और मीटिंग रूम के बाहर इंतज़ार करते लोग - सब मिलकर एक जीवंत कार्यस्थल का दृश्य प्रस्तुत करते थे । हर कर्मचारी अपनी जिम्मेदारियों में इतना व्यस्त रहता कि कई बार पूरे दिन एक-दूसरे से दो मिनट बात करने का भी समय नहीं मिलता । लेकिन इस व्यस्त दिनचर्या में एक समय ऐसा था जिसका सभी बेसब्री से इंतजार करते थे - शाम के चार बजे की चाय ।

जैसे ही घड़ी की सुइयाँ चार पर पहुँचतीं, माहौल बदल जाता । कोई अपनी कुर्सी पीछे खिसकाता, कोई कॉफी मशीन की ओर बढ़ता, तो कोई अपने पसंदीदा साथियों को आवाज़ देता - "चलो, चाय हो जाए ।" यही आधा घंटा पूरे ऑफिस में मुस्कानें बिखेर देता । उसी महीने कंपनी में नई कर्मचारी स्नेहा ने ज्वॉइन किया था । वह अपने काम में कुशल थी, लेकिन उससे भी अधिक उसकी आदत लोगों को ध्यान से देखने और समझने की थी । वह मानती थी कि किसी भी संस्था की असली ताकत उसके लोग होते हैं ।

कुछ ही दिनों में उसने एक बात नोटिस की । ऑफिस के हाउसकीपिंग विभाग के रमेश जी पूरे दिन हर जगह दिखाई देते थे । सुबह सबसे पहले वही ऑफिस पहुँचते । सभी के आने से पहले केबिन साफ करना, मीटिंग रूम व्यवस्थित करना, पानी की बोतलें भरना, प्रिंटर में पेपर लगाना, कॉन्फ्रेंस के बाद व्यवस्था संभालना - उनका दिन बिना रुके चलता रहता । यदि किसी का पेन गिर जाए, फाइल कहीं रह जाए या किसी कमरे में एसी ठीक से न चल रहा हो, सबसे पहले आवाज़ आती - "रमेश जी!" और हर बार मुस्कुराते हुए जवाब मिलता - "अभी करता हूँ, सर ।" लेकिन शाम की चाय के समय स्नेहा ने देखा कि वही रमेश जी हमेशा कैंटीन के एक कोने में अकेले बैठकर अपनी स्टील की छोटी-सी प्याली में चाय पीते थे । बाकी कर्मचारी अपने-अपने समूहों में हँसी-मज़ाक करते रहते, लेकिन शायद ही कोई उनके पास जाकर बैठता ।

स्नेहा के मन में यह दृश्य कई दिनों तक घूमता रहा । एक दिन उसने तय किया कि बदलाव किसी और से नहीं, खुद से शुरू होना चाहिए । उसने चाय ली और सीधे रमेश जी के पास जाकर बोली - "अगर आपको आपत्ति न हो तो आज मैं आपके पास बैठकर चाय पी लूँ ?" रमेश जी पहले तो थोड़ा असहज हुए - "अरे मैडम, आप वहाँ सबके साथ बैठिए ।" स्नेहा मुस्कुराई - "आज मेरा मन यहीं बैठने का है ।" दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई ।

पहले मौसम की बातें हुईं, फिर परिवार की । स्नेहा को पता चला कि रमेश जी पिछले पंद्रह वर्षों से इसी कंपनी में काम कर रहे हैं । उन्होंने इस ऑफिस को छोटी-सी शाखा से आज के बड़े कॉर्पोरेट कार्यालय तक बढ़ते देखा था । उन्हें लगभग हर कर्मचारी का नाम याद था, लेकिन बहुत कम लोग उनके बारे में कुछ जानते थे । अगले दिन स्नेहा फिर उनके साथ बैठी । इस बार अकाउंट्स विभाग के रोहित भी आ गए । तीसरे दिन एचआर की पूजा और आईटी टीम के विवेक भी वहीं बैठ गए । धीरे-धीरे वह कोना ऑफिस का सबसे जीवंत स्थान बन

गया । अब वहाँ केवल चाय नहीं पी जाती थी । वहाँ जीवन के अनुभव साझा होते थे, हँसी बाँटी जाती थी, समस्याओं का समाधान निकलता था । और, सबसे महत्वपूर्ण कि लोग एक - दूसरे को सुनते थे ।

एक दिन बातचीत के दौरान रमेश जी ने संकोच से बताया कि उनके बेटे अमन का सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज में चयन हुआ है । यह कहते समय उनके चेहरे पर गर्व भी था और चिंता भी । स्नेहा ने पूछा - "फिर आप खुश क्यों नहीं लग रहे ?" उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा - "खुशी तो बहुत है मैडम ... लेकिन पढ़ाई का खर्च थोड़ा बड़ा है । कोशिश करूँगा, जैसे-तैसे हो ही जाएगा ।" उन्होंने यह बात किसी सहायता की उम्मीद से नहीं कही थी, बस मन हल्का करने के लिए । उस दिन चाय खत्म हुई, लेकिन सभी के मन में एक विचार जन्म ले चुका था ।

अगले सप्ताह कंपनी का स्थापना-दिवस था । हर वर्ष की तरह इस बार भी सांस्कृतिक कार्यक्रम और सम्मान समारोह आयोजित होना था । एचआर टीम ने एक अलग योजना बनाई । कार्यक्रम के अंत में मंच पर रमेश जी को बुलाया गया । वे घबराए हुए मंच पर पहुँचे । एचआर प्रमुख ने कहा - "आज हम उस व्यक्ति का सम्मान करना चाहते हैं, जिसने वर्षों तक बिना किसी अपेक्षा के इस कार्यालय को अपना घर समझकर संभाला ।" पूरा सभागार तालियों से गूँज उठा । इसके बाद कर्मचारियों की ओर से अमन की पढ़ाई के लिए किताबों का सेट, एक नया लैपटॉप और एक छोटी-सी आर्थिक सहायता भेंट की गई । रमेश जी कुछ क्षणों तक बोल ही नहीं पाए। उनकी आँखों से आँसू बह निकले । उन्होंने हाथ जोड़ते हुए कहा - "मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मेरे बेटे की खुशी इस पूरे ऑफिस की खुशी बन जाएगी । मुझे आज पहली बार लगा कि मैं यहाँ सिर्फ नौकरी नहीं करता ... मैं अपने परिवार के बीच काम करता हूँ ।" उस दिन वहाँ मौजूद कई लोगों की आँखें भी नम थीं । लेकिन कहानी यहीं समाप्त नहीं हुई ।

कुछ महीनों बाद ऑफिस में एक नई परंपरा शुरू हुई । हर शुक्रवार चाय के समय अलग-अलग विभाग के कर्मचारी एक साथ बैठते । कोई अपने जीवन का अनुभव साझा करता । कोई अपनी रुचि बताता । कोई किताबों की चर्चा करता । कोई संगीत सुनाता । और, कभी-कभी रमेश जी अपने गाँव की कहानियाँ सुनाते जिन्हें सुनने के लिए सभी उत्सुक रहते । धीरे-धीरे विभागों के बीच की दूरी कम होने लगी । काम में सहयोग बढ़ा । गलतफहमियाँ घटीं । लोग एक-दूसरे को केवल पदनाम से नहीं, बल्कि मनुष्य के रूप में पहचानने लगे ।

करीब चार वर्ष बाद अमन इंजीनियर बन गया । पहली नौकरी मिलने के बाद वह मिठाई का डिब्बा लेकर ऑफिस आया । उसने सभी कर्मचारियों के सामने कहा - "आज मैं जो भी हूँ, उसमें मेरे माता-पिता के साथ-साथ इस ऑफिस परिवार का भी योगदान है । आपने सिर्फ मेरी पढ़ाई में मदद नहीं की, बल्कि मेरे पिता को यह विश्वास दिलाया कि मेहनत और ईमानदारी कभी अनदेखी नहीं जाती ।" पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा । स्नेहा मुस्कुरा रही थी । उसे याद आया कि यह सब केवल एक छोटे-से निर्णय से शुरू हुआ था - एक दिन किसी अकेले व्यक्ति के पास बैठकर उसके साथ चाय पीने का निर्णय ।

जीवन में अक्सर हम बड़े बदलावों की तलाश करते हैं, जबकि वास्तविक परिवर्तन छोटी-छोटी संवेदनशीलताओं से जन्म लेते हैं - एक मुस्कान... एक नमस्ते...

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।। **- भारतेन्दु हरिश्चंद्र**

सेहत की हाज़िरी



श्री अनिल पूनिया
आशुलिपिक ग्रेड-II

दफ्तर की हाज़िरी तो रोज़ लगती है... क्या सेहत की भी लगती है?

"आज एक छोटा-सा प्रयोग कीजिए। घर जाकर अपने बच्चे से पूछिए – 'बेटा, मैं तुम्हें लाखों रुपये दूँ या हमेशा तुम्हारे साथ स्वस्थ रहूँ ?' शायद वह बिना एक पल सोचे कहेगा – 'मुझे आप स्वस्थ चाहिए ।'

हम पूरी ज़िंदगी अपने परिवार की खुशियों के लिए मेहनत करते हैं । अच्छी पढ़ाई, अच्छा घर, अच्छी ज़िंदगी और सुरक्षित भविष्य देने के लिए दिन-रात काम करते हैं ।

लेकिन कभी-कभी यह सोचने का समय ही नहीं निकालते कि जिस शरीर के सहारे हम यह सब कर रहे हैं, अगर वही हमारा साथ छोड़ने लगे तो इन सारी उपलब्धियों का क्या होगा ? आखिर बच्चों के लिए सबसे बड़ा उपहार महँगे खिलौने, बड़ी गाड़ी या बैंक बैलेंस नहीं, बल्कि एक स्वस्थ माँ और स्वस्थ पिता हैं । माता-पिता के लिए भी सबसे बड़ी खुशी यही होती है कि उनका बेटा या बेटी स्वस्थ रहे, ताकि बुढ़ापे में उनका सहारा बन सके । इसलिए स्वास्थ्य केवल हमारी ज़रूरत नहीं, पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी है ।

मुंबई जैसे शहर में रहने वाले लाखों कर्मचारियों की सुबह लगभग एक जैसी होती है । अलार्म बजता है, जल्दी-जल्दी तैयार होना, टिफिन उठाना, स्टेशन की ओर भागना, भीड़ से भरी लोकल ट्रेन में किसी तरह जगह बनाना और फिर समय पर दफ्तर पहुँचना । दिन भर कंप्यूटर, फाइलें, ई-मेल, बैठकें और जिम्मेदारियाँ । शाम को फिर वही लंबा सफर । जब तक घर पहुँचते हैं, शरीर कहता है – "बस... अब आराम चाहिए ।" ऐसे में टहलना, व्यायाम करना या बच्चों के साथ खेलना अक्सर अगले दिन के लिए टल जाता है । यही "कल" धीरे-धीरे महीनों और फिर वर्षों में बदल जाता है ।

मनुष्य अपने सबसे प्रिय साथी का सबसे ज़्यादा ध्यान रखता है । आज ज़रा अपने मोबाइल को ही देख लीजिए । बैटरी 20% होते ही चार्जर ढूँढ़ने लगते हैं । स्क्रीन पर हल्का-सा निशान आ जाए तो नया गार्ड लगवा लेते हैं । नया कवर भी समय-समय पर बदलते रहते हैं । लेकिन अपना शरीर ? सुबह से कमर में दर्द हो रहा हो, गर्दन अकड़ी हो, नींद पूरी न हुई हो, फिर भी जवाब वही – "चलो... अभी तो काम करना है ।" कभी-कभी लगता है कि हमें मोबाइल की वारंटी खत्म होने की चिंता अपने शरीर से ज़्यादा रहती है ।

अगर ऑफिस की कुर्सी बोल सकती, तो शायद वह भी एक दिन शिकायत करती – "भाई साहब, थोड़ा उठ भी जाया करो । सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक मुझ पर ही लदे रहते हो । मुझे भी थोड़ा आराम चाहिए !" और अगर हमारी स्मार्ट वॉच सच में नाराज़ हो सकती, तो शायद कहती – "मैं हर घंटे 'Time to Move' लिख-लिखकर थक गई, लेकिन तुमने तो मुझे सिर्फ़ समय देखने की घड़ी बना दिया !" शाम को वह मासूमियत से बताती है – Today's Steps: 1,842 और हम गर्व से सोचते हैं – "इतना तो मैंने ऑफिस में फाइलें ढूँढ़ते हुए ही चल लिया होगा!"

हम भारतीयों की एक और प्यारी आदत है । हर साल 1 जनवरी को संकल्प लेते हैं – "इस बार रोज़ सुबह उठकर वॉक करेंगे, योग करेंगे, जिम जाएँगे ।" फिर 2 जनवरी को कहते हैं – "आज थोड़ा काम ज़्यादा है।" 5 जनवरी को – "सोमवार से पक्का।" और अगले सोमवार को – "अगले महीने से शुरू करेंगे ।" देखते-देखते नया साल फिर आ जाता है और हमारा संकल्प वहीं का वहीं रह जाता है ।

मुंबई की लोकल भी हमें रोज़ बहुत कुछ सिखाती है । ट्रेन में सीट मिल जाए तो लगता है कि आज किस्मत साथ है । लेकिन अगर कोई कह दे – "आज 30 मिनट पैदल चल लेते हैं", तो पहला सवाल होता है – "ऑटो मिल जाएगा क्या?" सच तो यह है कि पैदल चलना हमारे शरीर के लिए उतना ही ज़रूरी है, जितना मोबाइल के लिए चार्जिंग। ज़रा कल्पना कीजिए कि अगर हमारा शरीर भी मोबाइल की तरह नोटिफिकेशन भेजता, तो क्या होता?

कमर: "कृपया मुझे रोज़ थोड़ा सीधा बैठने का मौका दें।"
दिल: "मैं पिछले छह महीने से 30 मिनट की सैर का इंतज़ार कर रहा हूँ।"
घुटने: "सीढ़ियाँ अभी भी मौजूद हैं, सिर्फ़ लिफ्ट ही दुनिया का आख़िरी रास्ता नहीं है।"
शरीर की बैटरी: "5% शेष... कृपया नींद, पौष्टिक भोजन और थोड़ी-सी कसरत से चार्ज करें।"

शायद तब हम अपने शरीर को भी उतनी ही गंभीरता से लेते, जितनी मोबाइल की बैटरी को लेते हैं।

हास्य-विनोद अपनी जगह है, लेकिन सच्चाई यह है कि हमारा शरीर धीरे-धीरे संकेत देता रहता है । पहले गर्दन में हल्का दर्द होता है, फिर कमर जवाब देने लगती है । सीढ़ियाँ चढ़ते समय साँस फूलने लगती है । रात की नींद कम होने लगती है । मेडिकल रिपोर्ट में वजन बढ़ा हुआ, ब्लड प्रेशर सामान्य से अधिक या शुगर की शुरुआत दिखाई देती है । हमें लगता है कि यह सब अचानक हुआ है, जबकि सच यह है कि शरीर वर्षों से हमें समझाने की कोशिश कर रहा था ।

गाड़ी खराब हो जाए तो हम उसे सर्विस सेंटर ले जाते हैं । बहुत पुरानी हो जाए तो नई खरीद लेते हैं । मोबाइल बदल लेते हैं । घर बड़ा बना लेते हैं । लेकिन ईश्वर ने हमें जीवन भर के लिए सिर्फ़ एक ही शरीर दिया है । यही हमारी सबसे बड़ी पूँजी है । इसी शरीर के सहारे हमें अपने बच्चों का भविष्य बनाना है, अपने माता-पिता की सेवा करनी है और अपने सपनों को पूरा करना है । इसलिए शरीर की देखभाल कोई शौक नहीं, बल्कि सबसे बड़ा निवेश है ।

दुनिया के कुछ देशों, विशेषकर जापान और कई यूरोपीय देशों से हमें एक अच्छी सीख मिलती है । वहाँ लोग मेहनत कम नहीं करते, बल्कि पूरी लगन से काम करते हैं । फर्क सिर्फ़ इतना है कि वे अपने शरीर को भी उतनी ही अहमियत देते हैं । पैदल चलना, साइकिल का उपयोग, संतुलित भोजन, कम मात्रा में खाना, समय पर सोना और रोज़ थोड़ा सक्रिय रहना उनकी आदत का हिस्सा है । यही कारण है कि वहाँ बहुत से बुज़ुर्ग 80–90 वर्ष की उम्र में भी अपने काम स्वयं करते हैं, पार्क में घूमते हैं और जीवन का आनंद लेते हैं । यह किसी चमत्कार का नहीं, बल्कि अच्छी आदतों का परिणाम है ।

हमारे लिए भी शुरुआत कठिन नहीं है । हर घंटे दो मिनट उठकर चलना, जहाँ संभव हो सीढ़ियाँ चुनना, रोज़ आधा घंटा पैदल चलना, घर का भोजन खाना, पर्याप्त पानी पीना, समय पर सोना और छुट्टी वाले दिन परिवार के साथ पार्क में टहलना – ये छोटे-छोटे कदम भविष्य में बड़ी बीमारियों से बचा सकते हैं । याद रखिए, स्वास्थ्य एक दिन में नहीं बनता; यह रोज़ किए गए छोटे-छोटे सही निर्णयों का परिणाम होता है ।

लेख समाप्त करने से पहले एक आख़िरी बात ... कल्पना कीजिए कि कई वर्षों की नौकरी के बाद आप रिटायर हुए हैं । बैंक खाते में अच्छी बचत है । अपना घर है । गाड़ी है । बच्चों ने भी अच्छी पढ़ाई कर ली है । तभी आपका छोटा-सा पोता आपका हाथ पकड़कर कहता है – "दादाजी, मेरे साथ दौड़ लगाइए ..." या आपका

बच्चा कहता है – "पापा, चलिए आज पहाड़ी पर सूर्योदय देखने चलते हैं ।" लेकिन आपका शरीर जवाब दे देता है –"काश... मैं चल पाता ।"

उस दिन शायद सबसे ज़्यादा अफसोस इस बात का नहीं होगा कि हमने कम पैसा कमाया, बल्कि इस बात का होगा कि जिस शरीर ने पूरी ज़िंदगी हमारा साथ दिया, उसके लिए हम रोज़ सिर्फ़ आधा घंटा भी नहीं निकाल पाए ।

याद रखिए – बच्चों को विरासत में केवल संपत्ति नहीं चाहिए, उन्हें सबसे पहले स्वस्थ माता-पिता चाहिए। माता-पिता की सेवा करने के लिए केवल अच्छा बेटा या बेटी होना काफी नहीं, स्वस्थ होना भी ज़रूरी है। रिटायरमेंट के बाद सबसे बड़ी खुशी बैंक बैलेंस नहीं, बल्कि बिना सहारे चल पाना, बिना दर्द मुस्कुराना और अपने अपनों के साथ हँस पाना है । आइए, आज से एक छोटा-सा संकल्प लें । दफ्तर की हाज़िरी तो हम रोज़ लगाते हैं, अब अपनी सेहत की हाज़िरी भी रोज़ लगाएँगे । क्योंकि अच्छी नौकरी हमें जीवन जीने का साधन देती है, लेकिन अच्छा स्वास्थ्य उस जीवन को पूरी तरह जीने की ताकत देता है ।

और अंत में बस इतना याद रखिए – "अगर आप अपने परिवार से सच्चा प्यार करते हैं, तो उनके लिए सबसे बड़ा उपहार महँगी चीज़ें नहीं, बल्कि आपका स्वस्थ, मुस्कुराता हुआ और लंबे समय तक उनके साथ रहनेवाला जीवन है ।"



हिंदी आज चाहती हमसे, हम सब निश्चल अंतस्तल से
सहज विनम्र अथक यत्नों से, माँगे न्याय आज से कल से
कोटि-कोटि कंठों की भाषा जन-गण की मुखरित अभिलाषा
हिंदी है पहचान हमारी, हिंदी हम सबकी परिभाषा - डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है - सुमित्रानंदन पंत

नाम में सब कुछ रखा है !



सुश्री शिवानी
स.ले.प.अ.

बात बहुत पुरानी है। मेरी एक सहेली है, स्कूल से ही हमलोग साथ-साथ हैं। हम दोनों ने एक ही साथ ग्रैज्युएशन भी किया । संयोग ऐसा रहा कि हम दोनों ने एक साथ ही कर्मचारी चयन आयोग की स्नातक-स्तरीय परीक्षा दी और चयन भी हो गया । ईश्वर की लीला अभी समाप्त नहीं हुई थी । हमलोगों को भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग के एक ही कार्यालय में लेखापरीक्षक की नौकरी मिली । हम दोनों में इस बात की खुशी भी थी, और हँसी-मज़ाक का माध्यम भी यही बात होती कि न जाने हम एक-दूसरे का पीछा कहाँ तक करनेवाले हैं । हमारे दोनों परिवार के लोग भी इस अद्भुत संयोग से गद्गद थे ।

नियत तिथि को हम दोनों ने कार्यालय में ड्यूटी ज्वायन की । यहाँ भी हम दोनों को एक ही अनुभाग मिला । हम दोनों ने मिलकर एक वन बीएचके फ्लैट किराए पर ले लिया । साथ में ऑफिस आते और साथ में जाते । जिस मंजिल पर मेरा अनुभाग था उसमें एक बड़ा-सा हॉल था जिसमें पाँच-छह पुरुष और हम दोनों सहित चार महिला कर्मचारी बैठते थे। ऑफिस में एक मध्यम आयु के एमटीएस भी थे जिनका नाम था ... साजन । मैंने एक दिन उनसे पूछ ही लिया था कि क्या उनका सही नाम यही है ? उन्होंने बड़े ही भोलेपन से बताया था कि क्या कहें मैडम, जन्म के समय मेरा नाम रखा गया था सत्य नारायण । लेकिन पता नहीं कैसे सारे सर्टिफिकेट में साजन हो गया । बात आई, गई और मैं अपने काम में लग गई ।

साजन का काम था फाइलों के एक टेबल से दूसरे टेबल तक ले जाना, बाहर जानेवाले पत्रों को डाकघर जाकर पोस्ट करना, प्राप्त हुए पत्रों को अथवा टाइप किए गए पत्रों को स्टांप वगैरह लगाकर उनका आवक-जावक नंबर देना, माँगने पर चाय - पानी लाकर देना आदि आदि ।

हालाँकि नौकरी करते मुझे अभी कुछ ही महीने हुए थे । नौकरी के लिए घर से निकलते समय हम दोनों सहेलियों के परिवारवालों ने काफी कुछ समझाया था । उनमें से एक प्रमुख बात यह थी कि कार्यालय में सबको आदर देना, चाहे छोटा हो या बड़ा । सभी सम्मान के पात्र होते हैं । हम दोनों सहेलियों ने इस बात की गाँठ बाँध ली थी । कार्यालय में हम सबके नाम के साथ 'जी' लगाते । कार्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी हम दोनों के व्यवहार से बहुत खुश रहते थे । कई बार कुछ बुज़ुर्ग कर्मचारी हँसी-खेल में कार्यालय के लोगों को कहते भी थे कि दूसरों को आदर कैसे देना चाहिए, यह इन दो बच्चियों से सीखो ।

वैसे तो हमलोग मिस्टर साजन को कभी पुकारते नहीं थे, इशारों से ही काम चला लेते थे । एक दिन कार्यालय के बाद हम दोनों सहेलियाँ अपने फ्लैट में हँसी-मज़ाक कर रही थीं । लेकिन मैने पूछा - अरी विभा, यदि तुम्हें कार्यालय के एमटीएस साजन को बुलाना हो तो कैसे बुलाओगी ? विभा ने मेरे प्रश्न का तेवर भाँप लिया और तुरंत बोल पड़ी - उन्हें तो मैं मिस्टर साजन कहकर बुलाऊँगी । वह मन ही मन खुश थी कि उसने मेरे प्रश्न के पीछे की व्यंजना को पंक्चर कर दिया था । मैं भी ठहरी उसकी सहेली । मैंने कहा - अच्छा बच्चू, देखते हैं कि कब तक 'जी' से भागती हो । वैसे मिस्टर साजन पर भी मैं बहुत कुछ कह सकती थी, पर मैनें कुछ नहीं कहा । क्योंकि मिस्टर साजन तो मैं खुद भी बोलती थी ।

कार्यालय में एक और एमटीएस थे - प्रकाश जी । इनका नाम ही प्रकाश था, काम में दूर-दूर तक कहीं कोई प्रकाश नहीं था । सुबह-सुबह सबके आने से पहले बड़े-से जग में पानी भरकर कोने में रखे स्टूल पर रख देते। कोई अगर पीने को पानी माँगता तो दुष्टतापूर्वक मुस्कुराते हुए कहते..."इतना बड़ा जग भरा रखा है, खुद लेके पी लो ।" बड़े साहब के आने जाने, मीटिंग्स में जाने की सारी खुफिया जानकारी उनके पास रहती थी, उसी के चलते वे बड़ी ठसक से रहते, हाथ पर हाथ धरे बीड़ी पीते और मौज करते । इस कारण कार्यालय का कोई भी सामान्य कर्मचारी उन्हें कोई काम नहीं कहता । सारे काम बालम के हिस्से में ही आते ।

बगल के कार्यालय में विभा के जान-पहचान की कुछ लड़कियाँ काम करती थीं । उनसे मेरी बस हाय-हेलो तक ही जान-पहचान थी । एक दिन वे लड़कियाँ विभा से मिलने हमारे कार्यालय में आ गईं । दूसरे कार्यालय से कोई मित्र आए तो आवभगत तो करनी ही पड़ती है । उन्हें देखकर विभा काफी प्रसन्न हुई, कुछ देर स्कूल-कॉलेज, घर-परिवार की बातों में व्यस्त रहने के बाद विभा को उन्हें चाय पिलाने का ध्यान आया । अब तो चपरासी को बुलाना ही पड़ेगा । सामने दूसरे कोने में बैठे प्रकाश जी बीड़ी फूँक रहे थे । बड़ी धर्मसंकट की स्थिति आन पड़ी । प्रकाश जी को बोलना और न बोलना बराबर ही था । विभा ने इधर-उधर देखा । कोई भी नहीं था । कोई और चारा न देखकर उसने जोर से आवाज दी - साजन जी, चार कप चाय लेते आइएगा । “ठीक है मैडम, अभी लाता हूँ” - नेपथ्य से साजन की आवाज गूँजी थी ।

इतना सुनते ही कार्यालय की अन्य महिलाएँ जोर से खिलखिलाकर हँस पड़ी, मैं भी हँसने लगी । कमरे में बैठे बाकी पुरुष सहयोगी भी मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे । विभा थोड़ी-सी झेंपी, खिसियाई और फिर अपनी सहेलियों को स्पष्टीकरण देने में जुट गई - "अब क्या करूँ, इनका नाम ही ऐसा है ।" खैर, विभा ने उस दिन तो सहेलियों को चाय पिलाकर रफा-दफा कर दिया, पर उसके बाद जितने समय वह उस कार्यालय में रही, इस संबोधन ने उसका पीछा नहीं छोड़ा ।

विभा की सबसे अधिक मौज तो मैंने ले ली । फ्लैट पहुँचकर मैंने विभा को विभा कहकर नहीं पुकारा - “साजन जी, क्या आप चाय पिएँगी” ? विभा ने आश्चर्य से पूछा - यह घर है, यहाँ कोई एमटीएस कैसे आएगा ? तुमने किसी को बुलाया है क्या ? मैने तपाक् से कहा - नहीं मैडम, मैंने आपको पुकारा है - साजन जी ! फिर तो ‘साजन जी’ कहते ही कभी भी न चिढ़नेवाली विभा अब जल-भुनकर राख होने लगी । मेरे हाथ एक बड़ा ब्रह्मास्त्र लग गया था । मुझे जब भी उससे कुछ अधिक काम करवाना होता, तो मैं इस ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर डालती ।

अन्य लोग मानें या न मानें, मैं तो मानती हूँ कि नाम में थोड़ा नहीं, बहुत कुछ रखा है । अब देखिए न, वह एमटीएस कार्यालय में स्वयं मेरा काम कर देते हैं और उनका नाम मेरे घर में मेरा काम कर देता है ।



कॉकरोच आया !



श्री अजीत कुमार
आँ.प्र.प्र

चौंकिए नहीं, यह उस कॉकरोच की कहानी नहीं है जो आप समझ रहे हैं। यह ईश्वर द्वारा बनाए गए उस अद्भुत जीव की कहानी है जिसे हम सभी बड़े ही आदर से तेलचट्टा अर्थात् कॉकरोच कहते हैं ।

कहते हैं नृत्य मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति है । लेकिन मेरी पत्नी के साथ जो हुआ, उसमें मन की भावनाएँ कम और कॉकरोच की कृपा ज्यादा थी!

उस दिन मेरी पत्नी बड़े आराम से अपने कमरे में खड़ी थी । हाथ में चाय का कप था और चेहरे पर सुकून की मुस्कान ।

तभी अचानक ... मेरी पत्नी के पैर पर कुछ रेंगता हुआ महसूस हुआ । पहले तो उसने सोचा– "शायद कोई बाल या धागा होगा ।" लेकिन अगले ही पल जब उसने नीचे देखा तो उसकी चीख निकल गई – "आsssssssssssss!!!

उसके पैर पर एक मोटा - ताजा कॉकरोच विराजमान था ! वह ऐसे आराम से टहल रहा था जैसे पैर मेरी पत्नी का नहीं, बल्कि उसका निजी राजपथ हो ! मेरी पत्नी ने पैर झटका । कॉकरोच ने भी शायद सोचा – "अच्छा! और संगीत शुरू हो गया !" अचानक वह मेरी पत्नी के पैर से ऊपर की ओर दौड़ पड़ा । बस फिर क्या था ! मेरी पत्नी के अंदर की नृत्यांगना अचानक जाग उठी । उसने एक पैर ऊपर उठाया, दूसरा नीचे पटका, दोनों हाथ हवा में घुमाए और इतनी तेजी से गोल-गोल घूमने लगी कि अगर किसी ने देखा होता तो समझता – आज घर में कोई नई नृत्य विधा जन्म ले रही है !

लेकिन असली बात यह थी कि मेरी पत्नी नाच नहीं रही थी ... वह कॉकरोच से अपनी जान बचा रही थी! वह चिल्ला रही थी – "हट ! हट ! हट !" और पैर कर रहे थे – ठक ! ठक ! ठक ! कॉकरोच मेरी पत्नी के पैर पर ऊपर चढ़ा तो उसने पैर इतनी जोर से झटका कि पास रखी कुर्सी भी ढनमना कर गिर पड़ी । उसने हाथ-पैर चलाते हुए ऐसी मुद्रा बनाई कि भरतनाट्यम, कत्थक, गरबा और भाँगड़ा – चारों ने मिलकर शायद उसके नृत्य को देखकर आत्मसमर्पण कर दिया हो ! तभी मेरी बेटी कमरे में आई । माँ की भंगिमा देखकर कुछ क्षण तो वह स्तब्ध खड़ी रही । फिर बोली – "मम्मी ! आपको क्या हुआ ?"

पत्नी ने हाँफते हुए कहा – "कॉकरोच !"

वह बोली – "कहाँ है ?"

उसने पैर दिखाया । मेरी बेटी कॉकरोच को खोजने लगी । मेरी बेटी के कॉकरोच को खोजना शुरु करने के पहले ही मेरी पत्नी पाँच बार और घूम चुकी थी ।

बेटी बोली – "मम्मी, कॉकरोच तो नीचे गिर गया !"

मम्मी ने कहा – "तो पहले क्यों नहीं बताया ?"

बेटी हँसते हुए बोली – "मैं तो आपको नाचते देखकर सोच रही थी कि मुझे अब तक मालूम ही नहीं था कि आप इतना अच्छा डांस कर लेती हैं ! अब आप मुझे भी सिखाओ !" तभी मैं भी आ गया । मैने अपनी धर्मपत्नी को पसीने से तर-ब-तर, अस्त-व्यस्त और एक पैर पर खड़े देखा । मैने पूछा – "क्या हुआ ?"

बेटी बोली – "पापा ! मम्मी का आज कॉकरोच के साथ डांस मुकाबला हुआ है ।" मैंने चारों तरफ देखा और गंभीर मुद्रा में कहा – "कौन जीता ?"

पत्नी ने घूरकर देखा – "आपको मजाक सूझ रहा है ?"

मैने कहा - "नहीं-नहीं ... मैं तो बस इतना जानना चाहता हूँ कि आखिर ऐसा कौन है जिससे तुम हारती भी हो !"

अब तो बेटी हँसते-हँसते सोफे पर गिर पड़ी । मेरी पत्नी ने झाड़ू उठा लिया । मुझे तो साँप सूँघ गया । मुझे अंदेशा होने लगा कि कहीं इस हथियार का प्रयोग मुझ पर ही न हो जाए ! फिर उसने कहा – "आज इस कॉकरोच को छोड़ूँगी नहीं !" तभी वह कॉकरोच फिर सामने से निकल गया । मेरी पत्नी के हाथों से झाड़ू गिर गया। उसने दोबारा पैर उठा लिया और नृत्य शुरु हो गया । इस बार तो मेरी पत्नी ने ऐसा डांस किया कि घर के सभी लोग मोबाइल लेकर खड़े हो गए । कोई वीडियो बना रहा था, कोई हँस रहा था, और बेचारी मेरी पत्नी उस बेचारे कॉकरोच को पकड़ने के चक्कर में – कभी नागिन बन रही थी, कभी गरबा कर रही थी, कभी भाँगड़ा और कभी ऐसी छलाँग लगा रही थी जैसे ओलंपिक की तैयारी कर रही हो ! आखिरकार कॉकरोच भागकर पर्दे के पीछे छिप गया । सबने राहत की साँस ली । लेकिन तभी कोई बोल पड़ा – "वाह ! बहुत बढ़िया डांस था । बस एक कमी रह गई ।"

मेरी पत्नी ने पूछा – "क्या ?"

वह आदमी बोला – "काश ये डांस किसी स्टेज पर हुआ होता तो पहला ईनाम आपको ही मिलता, क्योंकि आपके सारे नेचुरल हाव-भाव से जजेस् भी प्रभावित हो जाते ।"

इतना सुनते ही कोई भी अपनी हँसी रोक नहीं पाया । सचमुच, उस दिन समझ में आया – नृत्य सीखने के लिए हमेशा गुरु की जरूरत नहीं होती । कभी-कभी ... एक कॉकरोच भी आपकी छिपी हुई प्रतिभा बाहर निकाल सकता है ! और उस दिन से हमलोगों ने मिलकर मेरी पत्नी का नया नाम रख दिया – "कॉकरोच क्वीन – जिसके पैर पर चढ़े कॉकरोच, नृत्य निकल आए हर रोज़ !" कहते हैं –"जब शब्द मौन हो जाते हैं, तब भाव नृत्य करते हैं ।" लेकिन मेरी पत्नी के मामले में तो – "जब कॉकरोच पैर पर चढ़ जाता है, तब भाव नहीं... पूरा शरीर नृत्य करता है !"



विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है। - वाल्टर चेनिंग

बेचारा संपादक !



जय राम सिंह
कनि. अनु. अधिकारी

दुनिया में कई तरह के बेचारे जीव होते हैं, उन्हीं में से एक होता है विभागीय हिंदी पत्रिका का संपादक ! यह एक ऐसा "बेचारा" जीव होता है जो बिना बजट के, बिना अच्छी सामग्री के, एक ऐसी पत्रिका छापने/प्रकाशित करने की कोशिश करता है जिसकी प्रशासकीय अनिवार्यता ही उसका एकमात्र व्यावहारिक महत्व होता है । पूरी प्रक्रिया बालू से तेल निकालने से किञ्चित भी कम कठिन नहीं होती ।

यह "बेचारा" जीव इस काम के सिलसिले में मानो बिना चप्पल पहने मई महीने की आग बरसाती दुपहरी में रेगिस्तान के रेतों पर पैदल चल रहा होता है, जिसे फटे बाँस से बाँसुरी बनाने की जिम्मेदारी मिली होती है, जो बिना बजट के, बिना अच्छी सामग्री के, एक ऐसी पत्रिका छापने/प्रकाशित करने की कोशिश करता है जिसे कोई तभी पढ़ना चाहता है जब उसमें उस व्यक्ति की कोई रचना छपी हो । वह भी सिर्फ अपनी रचनाएँ ही पढ़ता है । इतने से भी मन नहीं भरा तो संपादक के पास आकर प्रश्न दाग देता है - "सर, मेरी रचना के लिए कितने पैसे मिलेंगे ?" ऐसा नहीं है कि सारी रचनाएँ औसत ही होती हैं या घिसी-पिटी ही होती हैं । कई अच्छी रचनाएँ भी होती हैं जिन्हें अवश्य पढ़ना चाहिए । लेकिन प्रश्न वही कि पढ़े कौन ? दिन भर लेखापरीक्षा में जुते रहने के बाद शाम को जब अधिकारी घर पहुँचते हैं, तो लेखापरीक्षा का जिन्न वहाँ भी पीछा नहीं छोड़ता । घर तो घर ही होता है, वहाँ के कामों की अपनी सूची होती है, चाहे आप जितना कर पाएँ । फिर सोशल मीडिया भी तो है ही । ज़रा सोचिए, जिस व्यक्ति को दिन-रात की मेहनत करके बनाए गए लेखापरीक्षा रिपोर्ट को भी दोबारा पढ़ने की फुर्सत नहीं मिलती, वह विभागीय हिंदी पत्रिका को पढ़ने का साहस कैसे जुटाए ? कुल मिलाकर विभागीय पत्रिकाओं की पाठकीयता की यही स्थिति है । विभागीय पत्रिका ही क्यों, आजकल किसी भी मुद्रित सामग्री (पत्रिका, पुस्तक, समाचार पत्र इत्यादि) की पाठकीयता गम्भीर खतरे में है ।

एक दिन मेरी मुलाकात ऐसी ही किसी विभागीय पत्रिका "आवाज़" के सम्पादक श्री श्यामलाल सर से हो गई । श्यामलाल सर कुछ दिनों पहले तक हिंदी अधिकारी कहलाते थे, अब सहायक निदेशक हो गए हैं ।

मैंने पूछा - "सर, क्या हाल-चाल हैं ? आपकी पत्रिका का अगला अंक कब आ रहा है ?" मेरे प्रश्न को सुनकर श्यामलाल सर उदास हो गए । कहने लगे - "ईश्वर व्यक्ति को कुछ भी बनाए, बस विभागीय पत्रिका का संपादक न बनाए । बहुत कठिन दायित्व है । केबिन-केबिन, टेबल-टेबल जाकर रचनाओं की भीख माँगो । पहले तो कोई सुनेगा नहीं । सुन भी लिया तो ऐसी व्यस्तता दिखाएगा जैसे पूरे देश का भार उसी पर हो । जो रचनाएँ मिलती भी हैं उनमें से अधिकांश इंटरनेट से चुराई गई रचनाएँ होती हैं । राजभाषा विभाग का नियम है कि प्रत्येक कार्यालय को हिंदी पत्रिका छापनी चाहिए ताकि कार्यालयकर्मियों में हिंदी में लिखने की आदत का विकास हो । लेकिन सरकार को नियम बनाते समय इंटरनेट और चैट-जीपीटी जैसे एआई टूल्स का अंदाज़ा नहीं रहा होगा । एक दिन तो हद ही हो गई - किसी रचनादाता ने रामधारी सिंह दिनकर की कविता ही अपने नाम से प्रिंट कर मुझे चिपका दी । मैने अपना सिर पकड़ लिया - "सर, कविता उड़ाने के लिए दिनकर ही मिले थे ? कुछ तो सोचते ? दिनकर को मैं क्या, पूरा विश्व पढ़ता है !" कुछ रचनाकार पाँच-दस पंक्तियाँ लिखकर दे देते हैं और कहते हैं कि इसका विस्तार कर लीजिए और आर्टिकल बना लीजिए । एकाध स्वनामधन्य रचनाकार इंटरनेट से थोक के भाव सात-आठ रचनाएँ चुराकर अपने नाम से भेज देते हैं और सबको छापने को कहते हैं । यदि छाँट दिया, तो जवाब देते फिरो कि क्यों छाँटा । मानो रचना को उड़ाना और उसे छपवा देना उनका जन्मसिद्ध अधिकार हो ।"

इतना कहते-कहते श्यामलाल जी ने रुमाल से अपना माथा पोंछा । उनकी बातों को सुन-सुनकर मुझे लग रहा था जैसे वे मेरी ही बातें कर रहे हों । प्रकृति का नियम है कि जब कोई दूसरा मनुष्य समान मानसिकता के

स्तर पर मिल जाता है तब अनायास ही उससे प्रेम हो जाता है । मुझे भी श्यामलाल सर से प्रेम जैसा कुछ हो गया ।

मैंने उनसे कहा - "सर, कार्यालयीन काम तो ऐसे ही चलते रहेंगे, चलिए कैंटीन में चलकर चाय पीते हैं ।" श्यामलाल सर को मेरी सलाह अच्छी लगी । दोनों कैंटीन पहुँचे । लेकिन मूड का क्या किया जाए । संपादन की कठिनाइयाँ उनके मूड पर सवार हो चुकी थीं । कहने लगे - "तुम बताओ, पत्रिका के लिए किस तरह के लेखन को तुम रचना कहोगे ?" यह मेरे लिए आग्नेयास्त्र था । उन्हें मालूम था कि अपने कार्यालय में मैं भी संयोगवश वहाँ की पत्रिका का संपादक हूँ । प्रश्न को टाल भी नहीं सकता था । मैने कहा - "सर, कहानी, कविता, लेख, संस्मरण, यात्रा-वृतांत, जीवनी इत्यादि ही तो रचनाएँ कहलाती हैं ।" उन्होंने तपाक से मेरे उत्तर को लपका और अगला प्रश्न दाग दिया । यह प्रश्न पहलेवाले से भी बड़ा था, ब्रह्मास्त्र था । उन्होंने पूछा - "आज के युग में ज्ञान किसे चाहिए? सोशल मीडिया पर दिन-रात ज्ञान की गंगा प्रवाहित होती रहती है और लोग उसमें डूबते-उतराते रहते हैं । अलग से ज्ञान लेने की फुर्सत किसे है ? ऐसे में जबर्दस्ती ज्ञान बाँटना पाठकों पर अत्याचार नहीं तो और क्या है ? जितने लोग इंटरनेट से, एआई से अथवा किसी भी तरह से नकल-वकल करके रचनाएँ देते हैं, वे सभी रचनाएँ ज्ञान बाँटनेवाली होती हैं - आप ऐसा करो, वैसा न करो, सुबह जल्दी उठो, जंक फूड न खाओ, कभी तनावग्रस्त न रहो आदि आदि । हद तो तब हो जाती है जब पाँच-पाँच चक्कर-घनचक्कर रखनेवाला व्यक्ति अपनी रचना में पारिवारिक निष्ठा का ज्ञान दे रहा होता है । बारह-बारह घंटे स्क्रीन-टाइम रखनेवाला व्यक्ति जब ज्ञान देता है कि मोबाइल से मत जुड़ो, परिवार से जुड़ो, तब सचमुच मेरा खून खौल जाता है । बताओ, इसमें से कौन-सा ज्ञान ऐसा है जिसे पत्रिका में बताने की ज़रूरत है ? पत्रिका में स्वस्थ मनोरंजन चाहिए, सत्साहित्य चाहिए जिसे पढ़कर पाठक का बौद्धिक परिष्कार हो जाए । कार्यालयीन पत्रिका की अवधारणा ही हिंदी में सृजनात्मकता पर आधारित है । यहाँ नया सृजन तो दूर, जो होता है वह जंक-सृजन से अधिक कुछ भी तो नहीं ।"

मैने विषय को बदलने की कोशिश की - "सर, पत्रिका के लिए रचनाओं का प्रबंध करना तो एक पक्ष है, दूसरा और तीसरा पक्ष भी तो है ।" श्यामलाल सर ने सहमति दिखाई - "हाँ, बिल्कुल है । संपादक का एक और संवैधानिक दायित्व है - संदेशों को लिखना, बिल्कुल नियमों के अनुसार और व्यक्तित्व से मेल खाता हुआ । संदेश लिख लिया ? अभी ठहरो, विमोचन के समय दिया जानेवाला भाषण भी लिखो । कार्यालयीन पत्रिका का संपादक पूरा का पूरा एक-सदस्यीय प्रेस होता है । वह रचनाकार भी है, संपादक भी है, डिज़ाइनर भी है, प्रूफरीडर भी है और फोटोग्राफर भी है । 'है या नहीं है' से अधिक महत्व इस बात का है कि इनमें से प्रत्येक काम अपने आप में मिसाल कायम करनेवाला होना चाहिए । 'उत्कृष्ट' से नीचे कुछ भी स्वीकार्य नहीं है । यदि इसमें ज़रा-सा भी कुछ ऊपर-नीचे हो गया तो समझो कि संपादक का अपार-प्रेम (APAAR) ध्वस्त हो गया ।"

हम दोनों चाय पी रहे थे, और अपनी-अपनी व्यथा एक दूसरे से साझा करते जा रहे थे । श्यामलाल सर आज अपने-आप को पूरा का पूरा ऊँड़ेल देने के मूड में थे । रचनाओं का प्रबंध, छपाई से लेकर विभिन्न कार्यालयों से आनेवाली पाठकीय प्रतिक्रियाओं तक की बातें हुई । श्यामलाल सर अनुभवी अधिकारी हैं । कई कार्यालयों को देखा है । कहने लगे - "अधिकतर पाठकीय प्रतिक्रियाएँ खानापूर्ति होती हैं । 'आप मेरी प्रशंसा करें, मैं आपकी करूँगा' का सिद्धांत यहाँ लागू है ।" मैंने श्यामलाल सर को टोका - "सर, लेकिन आपकी पत्रिका का स्तर तो बहुत ही अच्छा है । मैनें कई अंक पढ़े हैं और अपनी पाठकीय सम्मति आपको पत्र द्वारा भी बताई है और मौखिक रूप से भी ।"

- "लेकिन विभाग में सिर्फ तुम या तुम्हारा कार्यालय ही नहीं है, डेढ़ सौ से अधिक अन्य कार्यालय भी हैं, मैं सबकी बात कर रहा हूँ ।" श्यामलाल सर ने अपने अनुभवजनित बात का विस्तार समझाया ।

हम दोनों की बातें चल ही रही थीं कि अचानक श्यामलाल सर का मोबाइल बज उठा । बॉस के निजी सचिव का फोन था । मुझे रुकने को कहकर श्यामलाल सर भागे । दस ही मिनटों में भागे-भागे आए । मुझे बोले - "क्षमा करना, मैं निकल रहा हूँ, बाकी बातें बाद में होंगी । अभी इमर्जेंसी है ।" मैं उठ खड़ा हुआ । पूछा - "सर क्या हुआ, सब ठीक-ठाक तो है न ?" हाँफते-हाँफते श्यामलाल सर कहते गए कि प्रेस में छपाई चल रही होगी और बॉस ने कुछ बदलने को कह दिया है, वहीं भागा जा रहा हूँ । मैनें उन्हें शुभकामनाएँ दीं और अपने कार्यालय लौट गया ।

अगले सप्ताह श्यामलाल सर की पत्रिका का विमोचन समारोह था । मेरे कार्यालय के लोग भी आमंत्रित थे। नियत समय से हमलोग पहुँच गए । भव्य सभागार सज-धजकर और भी अधिक भव्य लग रहा था । धीरे-धीरे उनके कार्यालय के लोग भी आने लगे । मैं दर्शकों के बीच में अपने कार्यालयकर्मियों के साथ बैठा था । मेरी दाहिनी ओर अत्यंत धीमी आवाज़ में बातें हो रही थी । कोई कह रहा था कि सिर्फ विमोचन ही होगा या कुछ खान-पान की भी व्यवस्था है ? चाय-पानी होता है तब आने का मन करता है । मैं उनकी बातें सुनकर ज़रा-सा भी अचंभित नहीं था । हिंदी और हिंदी पत्रिका की यही वास्तविकता है । पत्रिका के विमोचन का हिस्सा बनने के लिए बहुत कम लोग आते हैं । तभी प्रत्येक पंक्ति में विमोचित होनेवाली पत्रिका की प्रति बाँटी जाने लगी । मुझे भी एक प्रति मिली । मैं उलट-पलटकर देखने लगा । किसी पृष्ठ पर एक वाक्य देखकर मेरी साँसें रुक गईं । लिखा था - "हमें विकास को जड़ से मिटाना है ।" श्यामलाल सर विमोचन की व्यवस्थाओं में व्यस्त थे । किसी तरह भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ मैं उनके पास पहुँचा । मैंने उन्हें वह त्रुटि दिखाई । उसे आप प्रूफ-रीडिंग का मिस्टेक कहें या प्रिंटिंग-मिस्टेक, पर मिस्टेक तो भयंकर था । श्यामलाल सर ने माथा पीट लिया ।

विमोचन समारोह शुरु हुआ । इस बार हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से योजना बनाई गई थी कि स्वागत-भाषण कोई हिंदीतर कर्मचारी देगा । निर्धारित समय पर स्वागत-भाषण शुरु हुआ । एक कर्मचारी लिखित भाषण पढ़कर सभी महानुभावों का स्वागत करता जा रहा था । भाषण के क्रम में ही उसने पढ़ दिया कि मैं राजभाषा प्रकोष्ठ की तरफ से सभी आए हुए विपत्तियों का हार्दिक स्वागत करता हूँ । सामने बैठे दर्शकों में ठहाके गूँज गए, पुरजोर तालियाँ बजीं । उस कर्मचारी के भाषण में ग़लती से 'अतिथियों' की जगह 'विपत्तियों' प्रिंट हो गया था । बड़ी बात यह थी कि बोल देने के बाद भी वह कर्मचारी ठहाकों और तालियों का अर्थ नहीं समझ पाया ।

विमोचन का कार्यक्रम पूरा हुआ । धन्यवाद ज्ञापन की कमान स्वयं श्यामलाल सर ने सँभाली । उन्होंने धन्यवाद देने से पहले ही कहा - "मैंने इस पत्रिका में जान-बूझकर एक जगह भ्रष्टाचार की जगह पर विकास लिख दिया है । आपमें से जो कोई दस की गिनती से पहले उस त्रुटि की पृष्ठ-संख्या बता देगा, उसे आकर्षक उपहार दिया जाएगा ।" पत्रिकाओं के पन्ने तेजी से फड़फड़ाने लगे । दस की गिनती पूरी होने में समय ही कितना लगता है ? कोई भी उत्तर नहीं दे सका । श्यामलाल सर ने स्वयं ही कहा कि पृष्ठ संख्या चार पर एक वाक्य है - "हमें विकास को जड़ से मिटाना है । उस वाक्य में 'विकास' की जगह 'भ्रष्टाचार' पढ़ा जाए ।" सभी दर्शकों ने तालियाँ बजाईं, किंतु पुरस्कार कोई नहीं जीत पाया ।

कार्यक्रम संपन्न हुआ । मंचासीन महानुभावों ने श्यामलाल सर को बधाई दी । चाय-पानी की व्यवस्था थी, वह शुरु हो गई । मैं खिसकते-खिसकते श्यामलाल सर के पास पहुँचा - "सर, आपके प्रत्युत्पन्नमतित्व के आगे नतमस्तक हूँ । आपने अपने बुद्धिकौशल से विकास और भ्रष्टाचार को स्थानापन्न बना दिया ।" श्यामलाल सर भी हँस पड़े और इशारों में मुझे चुप कराते हुए कहा - कार्यालयों में राजभाषा का काम ऐसे ही होता है । और, दुनिया में सबसे बेचारा कौन ? दोनों एक साथ बोल पड़े - "सरकारी पत्रिका का संपादक, बेचारा संपादक !"

राजभाषा प्रश्नोत्तरी

1. निम्नलिखित में से कौन-सा ऐप कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) पर आधारित अनुवाद टूल नहीं है ?
(क) ज़ोमैटो (ख) भारती (ग) भाषिणी (घ) कंठस्थ

2. गूगल ट्रांसलेटर सॉफ्टवेयर किस वर्ष शुरु किया गया था ?
(क) 2016 (ख) 2012 (ग) 2006 (घ) 2010

3. यूनिकोड में हिंदी लिखने के लिए देवनागरी लिपि को कब शामिल किया गया ?
(क) 1991 (ख) 1998 (ग) 2005 (घ) 2009

4. इनमें से कौन सी भाषा देवनागरी लिपि में नहीं लिखी जाती है ?
(क) मराठी (ख) मैथिली (ग) नेपाली (घ) संथाली

5. इनमें से किस लिपि में अब यूआरएल (वेबसाइट का पता) बनाया जा सकता है ?
(क) ओल चिकी (ख) आबूगीदा (ग) देवनागरी (घ) इनमें से कोई नहीं

6. कोंकणी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?
(क) कोंकणी (ख) द्रविड़ (ग) रोमन (घ) देवनागरी

7. नस्तालीक क्या है ?
(क) एक कवि का नाम (ख) एक भाषा का नाम (ग) एक शहर का नाम (घ) एक लिपि का नाम

8. तमिल भाषा में कुल कितने अक्षर होते हैं ?
(क) 54 (ख) 247 (ग) 147 (घ) 47

9. भारत सरकार और सी-डैक (C-DAC) द्वारा मान्यता प्राप्त मानक यूनिकोड लेआउट का क्या नाम है ?
(क) इनस्क्रिप्ट (ख) आउटस्क्रिप्ट (ग) इनपुट टूल (घ) मंगल

10. 'ळ' किस भाषा का अक्षर है ?
(क) हिंदी (ख) संस्कृत (ग) मराठी (घ) गुजराती

11. भारत सरकार का आधिकारिक हिंदी फॉन्ट कौन-सा है ?
(क) मंगल (ख) कृतिदेव (ग) कोकिला (घ) इनमें से कोई नहीं

12. संविधान सभा में स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में निर्णय लेने के लिए विचार-विमर्श कब शुरु हुआ था?
(क) 12 सितंबर 1947 (ख) 14 सितंबर 1949 (ग) 13 सितंबर 1949 (घ) 14 सितंबर 1948

13. संविधान सभा में स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा पर हुई बैठकों की अध्यक्षता कौन कर रहे थे ?
(क) डॉ. बी आर अम्बेदकर (ख) डॉ, राजेन्द्र प्रसाद (ग) डॉ. अय्यंगर (घ) डॉ. कृपलानी

14. विश्व हिंदी दिवस कब मनाया जाता है ?
(क) 14 सितंबर (ख) 24 अक्तूबर (ग) 10 जनवरी (घ) 21 फरवरी

15. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन कहाँ हुआ था ?
(क) मॉरीशस (ख) सूरीनाम (ग) नई दिल्ली (घ) नागपुर

16. विश्व का एकमात्र हिंदी विश्वविद्यालय कहाँ है ?
(क) नागपुर (ख) वर्धा (ग) वाराणसी (घ) आगरा

(इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए गए हैं । पाठकगण कृपया पत्रिका को ध्यान से पढ़ें और सही उत्तर से अपने उत्तर का मिलान करें ।)

राजभाषा नियम 1976

सा.का.नि. 1052 --राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) की धारा 3 की उपधारा (4) के साथ पठित धारा 8 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थातः-

संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--

इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है। इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है। ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न होः-

'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है; 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः- केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है; 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ; 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है; 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं; 'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है; हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है ।

राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-

केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे;

क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं। केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो)या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क'या'ख'में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं । परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी

का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि- केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं; केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' या 'ग'में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी ।

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

आवेदन, अभ्यावेदन आदि-

कोई कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

जब उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाएगा।

यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना,जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे असम्यक विलम्ब के बिना उसी भाषा में दी जाएगी।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना -

कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

यदि यह प्रश्न उठता है कि कोई विशिष्ट दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं तो विभाग या कार्यालय का प्रधान उसका विनिश्चय करेगा।

उपनियम (1) में किसी बात के होते हुए भी, केन्द्रीय सरकार, आदेश द्वारा ऐसे अधिसूचित कार्यालयों को विनिर्दिष्ट कर सकती है जहां ऐसे कर्मचारियों द्वारा,जिन्हें हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिन्दी का प्रयोग किया जाएगा ।

हिन्दी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है;या

स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या

केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीकाा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है;या

केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किसी तारीख में से

उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम हो गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित कर सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचित कार्यालय नहीं रह जाएगा ।

मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

अनुपालन का उत्तरदायित्व-

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है;और

इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे ।

केन्द्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबन्धों के सम्यक अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है ।



आपके पत्र : आपकी प्रतिक्रियाएँ

आँचल पत्रिका के 24वें अंक की पाठकीय प्रतिक्रिया बहुत सारे कार्यालयों से आई हैं । इन सहृदय कार्यालयों के हम आभारी हैं जिन्होंने अपनी प्रतिक्रिया और अमूल्य सुझावों से पत्रिका की गुणवत्ता और पाठकीयता को समृद्ध करने में हमारी मदद की ।

क्रम संख्या	कार्यालय का नाम	पत्र संख्या
1	महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद, शाखा - भुवनेश्वर	हिंदी प्रकोष्ठ/सी.आर.ए./हिंदी पत्रिका पावती/2025-26/02/21
2	महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम	लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2026-27 दिनांक- 11-05-2026
3	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, ओडिशा, पुरी	ई-मेल दिनांक - 19-05-2026
4	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा	ई-मेल दिनांक - 12-05-2026
5	कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर	ई-मेल दिनांक 19-05-2026
6	महालेखाकार (लेखा एवं हक.) का कार्यालय, कर्नाटक	म.ले.(ले.य ह.)/हिंदी कक्ष/2026-27/157 दिनांक 11005-2026
7 8	कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा (II), पश्चिम बंगाल, कोलकाता	हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/175 दिनांक 21-05-2026
9	कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ, नई दिल्ली	ए.हिंदी/पत्रिका/4941/2024-25-26 दिनांक 09-06-2026
10	महानिदेशक लेखापरीक्षा कार्यालय, दक्षिण रेलवे, चेन्नै-3	एसए/हिंदी पत्रिका/2026/967 दिनांक 26-06-2026
11	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का कार्यालय, मध्य प्रदेश, ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर	प्रशासन/हिंदी/सम्मति/जावक- दिनांक 05.08.2026
12	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), हिमाचल प्रदेश, शिमला	प्र.म.ले.(ले.व.ह.)/हि.प्र./रा.भा. अ./पत्रिका समीक्षा/2026-27/41 दिनांक 16-07-2026

हिंदी का इक दिया जलाएँ ! आओ हिंदी को अपनाएँ !!

हँसना रोना जब हिंदी में, अभिनय, गायन जब हिंदी में
प्रणय-परीक्षा जब हिंदी में, मान-मनौव्वल जब हिंदी में, तब हिंदी से क्यों कतराएँ ?

हिंदी में ही आसन-भाषण, हिंदी देती है सिंहासन
हिंदी राष्ट्रकंठ कहता मन, हिंदी समझे झूमे जन-गण
हिंदी में ही कार्यनिष्पादन, करने में हम क्यों घबराएँ ? हिंदी से हम क्यों शरमाएँ ?

अभिव्यक्ति में हिंदी होगी, पूर्ण सुशोभित हिंदी होगी
तभी पूर्ण आज़ादी होगी, इतनी सरल कि कोई पढ़ ले, लिख ले, हिंदी पर इतराएँ ।
हिंदी का इक दिया जलाएँ ! आओ हिंदी को अपनाएँ !!

किसी भी लम्बी से लम्बी या कठिन से कठिन यात्रा की शुरुआत हमेशा पहले कदम से होती है । हिंदी में काम करना आसान है, शुरु तो कीजिए !

योगदान / नियुक्तियाँ / पदोन्नतियाँ / स्थानांतरण / सेवानिवृत्ति

(01.04.2026 से 30.09.2026 तक)

पदोन्नतियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री तुषार बने	सहा. पर्यवेक्षक	01.07.2026

योगदान/नियुक्तियाँ

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री नईम खान	व.ले.प.अ.	01.04.2026
2	श्रीमती स्वप्ना फुलपड़िया	व.ले.प.अ.	01.04.2026
3	श्री वासुदेव शर्मा	आशुलिपिक ग्रेड-I	01.04.2026
4	श्री संदीप पांडुले	निदेशक	08.04.2026
5	श्री आनंद श्रीवास्तव	आँ.प्र.प्र. ग्रेड-ए	30.07.2026

स्थानांतरण

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्री सजीथ जी	व.ले.प.अ.	14.08.2026

सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम	पदनाम	दिनांक
1	श्रीमती वर्षा मोकाशी	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.09.2026

उत्तीर्णता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	उत्तीर्णता का विवरण
1	श्री गुलशन कुमार	स.ले.प.अ.	एस ए एस
2	श्री रितेश कुमार	व.ले.प.	एस ए एस
3	श्री रॉबर्ट सिम्टे	व.ले.प.	एस ए एस

"आँचल" परिवार पदोन्नत हुए और एस ए एस परीक्षा उत्तीर्ण करनेवाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता है, नवनियुक्त और योगदान करनेवाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करते हुए सफल एवं सुखद करियर की शुभकामना देता है । **"आँचल"** परिवार स्थानांतरित हुए और सेवानिवृत्त हुए सभी कार्मिकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता है ।

राजभाषा प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1 - क, 2 - ग, 3 - क, 4 - घ, 5 - ग, 6 - घ, 7 - घ, 8 - ख, 9 - क, 10 - ग, 11 - घ, 12 - ग, 13 - ख, 14 - ग, 15 - घ, 16 - क

चित्रों के झरोखों से



महानिदेशक महोदय एवं अन्य गण्यमान्य महानुभावों के कर-कमलों द्वारा "आँचल" पत्रिका के 24वें अंक के विमोचन का दृश्य



कार्यालय के वार्षिकोत्सव समारोह का आनंद लेते हुए महानिदेशक महोदय एवं आमंत्रित दर्शकगण



वार्षिकोत्सव के रंगारंग कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात राष्ट्रगान गाने का दृश्य



कार्यालय के मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित क्रीड़ा-दिवस के अवसर पर लिया गया चित्र



वार्षिक क्रीड़ा-प्रतियोगिता में महिला पदक-विजेताओं का वार्षिकोत्सव के दौरान सम्मान



वार्षिक क्रीड़ा-प्रतियोगिता में पुरुष पदक-विजेताओं का वार्षिकोत्सव के दौरान सम्मान



शिशु-वर्ग की क्रीड़ा-प्रतियोगिताओं के विजेताओं से साथ महानिदेशक महोदय



जुलाई-सितंबर 2026 की तिमाही हिंदी कार्यशाला का दृश्य

आँचल



